بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -22

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

10 ज़ुल् हज्जा 1447 हिज्री कमरी, 28 -हिजरत 1405 हिज्री शम्सी, 28 मई 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

لَنۡ یَّنَالَ اللّٰہَ لُحُوۡمُہَا وَلَا دِمَآؤُہَا وَلٰکِنۡ یَّنَالُہُ التَّقۡوٰی مِنۡکُمۡ ؕ کَذٰلِکَ سَخَّرَہَا لَکُمۡ لِتُکَبِّرُوا اللّٰہَ عَلٰی مَا ہَدٰٮکُمۡ ؕ وَبَشِّرِ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ۝ ﴿سُوۡرَۃُ الۡحَجِّ:38﴾

अनुवाद : हरगिज़ खुदा तआला तक न उनका मांस पहुँचेगा और न उनका रक्त, लेकिन तुम्हारा तक़वा उसके पास पहुँचेगा।

इसी प्रकार उसने उन्हें तुम्हारे लिए वश में कर दिया है ताकि तुम खुदा तआला की महानता का वर्णन करो, इस कारण कि उसने तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान किया। और नेकी करने वालों को शुभ समाचार दे दो।

ईदुल-अज़्हा की फ़ज़ीलत और क़ुर्बानी का महत्व

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए तो मदीना के लोग वर्ष में दो दिन खुशी मनाया करते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : खुदा तआला ने तुम्हारे लिए उन दो दिनों के बदले उनसे बेहतर दो दिन निर्धारित किए हैं : ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़्हा।

(सुनन अबी दाऊद, किताबुस्सलात, बाब सलातुल ईदैन, हदीस : 1134)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यौमुन-नहर (ईदुल-अज़्हा के दिन) इब्ने आदम का कोई भी कर्म खुदा तआला के निकट रक्त बहाने (क़ुर्बानी करने) से अधिक प्रिय नहीं होता।

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल-अज़ाही, हदीस : 1493, सुनन इब्ने माजह, हदीस : 3126)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने निवेदन किया : या रसूलल्लाह! यह क़ुर्बानी क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यह तुम्हारे पिता इबराहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने निवेदन किया : इसमें हमारे लिए क्या प्रतिफल है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हर बाल के बदले एक नेकी।

(सुनन इब्ने माजह, किताबुल-अज़ाही, हदीस : 3127)

क़ुर्बानी का वास्तविक अर्थ और तक़वा की भावना

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

◉ खुदा तआला ने शरीअत-ए-इस्लाम में बहुत से आवश्यक आदेशों के लिए उदाहरण स्थापित किए हैं। अतः मनुष्य को यह आदेश है कि वह अपनी समस्त शक्तियों के साथ और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ खुदा तआला की राह में क़ुर्बान हो जाए। इसलिए बाहरी क़ुर्बानियाँ उसी अवस्था के लिए एक उदाहरण निर्धारित की गई हैं, लेकिन वास्तविक उद्देश्य यही क़ुर्बानी है। जैसा कि खुदा तआला फ़रमाता है :

لَنۡ یَّنَالَ اللّٰہَ لُحُوۡمُہَا وَلَا دِمَآؤُہَا وَلٰکِنۡ یَّنَالُہُ التَّقۡوٰی مِنۡکُمۡ

(अल-हज्ज : 38)

अर्थात खुदा तआला तक तुम्हारी क़ुर्बानियों का मांस नहीं पहुँचता और न रक्त पहुँचता है... बल्कि उससे इतना डरो कि मानो उसकी राह में मर ही जाओ और जैसे तुम अपने हाथ से क़ुर्बानियाँ ज़बह करते हो, उसी प्रकार तुम भी खुदा तआला की राह में ज़बह हो जाओ। जब कोई तक़्वा इस स्तर से कम होता है, तो वह अभी अपूर्ण है।

(चश्मा-ए-मआरिफ़त, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 23, पृष्ठ 99)

★ ★ ★

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

क़ुर्बानी की वास्तविक बुद्धि और तक़वा का संदेश

◉ हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आयत :

"لَنۡ یَّنَالَ اللّٰہَ لُحُوۡمُہَا وَلَا دِمَآؤُہَا وَلٰکِنۡ یَّنَالُہُ التَّقۡوٰی مِنۡکُمۡ ؕ کَذٰلِکَ سَخَّرَہَا لَکُمۡ لِتُکَبِّرُوا اللّٰہَ عَلٰی مَا ہَدٰٮکُمۡ ؕ وَبَشِّرِ الۡمُحۡسِنِیۡنَ"

की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं :

याद रखो, क़ुर्बानियों में यह बुद्धि नहीं कि उनका मांस या उनका रक्त खुदा तआला तक पहुँचता है। बल्कि उनमें बुद्धि यह है कि उनकी वजह से तक़्वा उत्पन्न होता है और वही तक़्वा खुदा तआला को प्रिय है।

कुछ लोग आपत्ति किया करते हैं कि क्या नऊज़ूबिल्लाह खुदा तआला हिन्दुओं के देवताओं की तरह रक्त का प्यासा और मांस का भूखा है कि वह पशुओं की क़ुर्बानी करने का आदेश देता है और उनकी जान की क़ुर्बानी को प्रसन्नता से स्वीकार करता है तथा क़ुर्बानी करने वालों को बहिश्त की शुभ सूचना देता है।

शेष 8 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज बैतुल्लाह और ईदुल-अज़्हा

अरकान-ए-इस्लाम में चौथा रुक्न हज है। हज की फ़र्ज़ियत और उसके नियमों का विस्तृत वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में आया है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं हज अदा करके उसके नियमों पर अमल करने की सुन्नत भी उम्मत के लिए जारी फ़रमा दी है। सूरह आल-ए-इमरान आयत 98 में ख़ुदा तआला ने फ़रमाया : और लोगों पर ख़ुदा तआला का यह अधिकार है कि वे उसके घर का हज करें, अर्थात जो भी उस घर तक जाने की सामर्थ्य रखता हो।

सूरह अल-हज्ज आयत 28 में फ़रमाया कि लोगों में हज की घोषणा कर दे, वे तेरे पास पैदल आएँगे और हर ऐसी सवारी पर भी जो लंबे सफ़र की थकान से दुबली हो गई हो। वे सवारियाँ और लोग हर गहरे और दूर के रास्ते से आएँगे।

हज के नियमों का वर्णन करते हुए ख़ुदा तआला ने सूरह अल-बक़रह की आयत 159 में फ़रमाया कि निश्चय ही सफ़ा और मरवा ख़ुदा तआला की निशानियों में से हैं। अतः जो कोई भी इस घर का हज करे या उमरा अदा करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि वह इन दोनों का भी चक्कर लगाए। सूरह अल-बक़रह की आयत 196 से 201 तक हज के नियमों का विस्तार से वर्णन मौजूद है।

हज की बुद्धि और दर्शन का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"साधक का अंतिम चरण यह है कि वह अपने नफ़्स से पूर्ण विरक्ति करके ख़ुदा तआला के प्रेम और उसकी मुहब्बत में डूब जाए। सच्चा प्रेमी और चाहने वाला अपनी जान और अपना हृदय क़ुर्बान कर देता है और बैतुल्लाह का तवाफ़ इस क़ुर्बानी के लिए एक बाहरी चिन्ह है। जैसे एक बैतुल्लाह नीचे पृथ्वी पर है, वैसे ही एक आकाश पर भी है। जब तक मनुष्य उसका तवाफ़ न करे, इसका तवाफ़ भी नहीं होता। उसका तवाफ़ करने वाला तो सारे कपड़े उतार कर केवल एक कपड़ा शरीर पर रख लेता है, परंतु उसका तवाफ़ करने वाला पूर्ण रूप से वस्त्र त्याग कर ख़ुदा तआला के लिए नग्न हो जाता है। तवाफ़ ख़ुदा तआलीय प्रेमियों की एक निशानी है। प्रेमी उसके चारों ओर घूमते हैं, मानो उनकी अपनी इच्छा शेष नहीं रही। वे उसके चारों ओर क़ुर्बान हो रहे होते हैं।"

(अल-बद्र, दिनांक 10 जनवरी 1907, पृष्ठ 15)

हज के लिए आर्थिक सामर्थ्य, स्वास्थ्य और मार्ग का सुरक्षित होना आवश्यक है। अर्थात यह शर्तों के साथ फ़र्ज़ है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"जो व्यक्ति धन की कमी, रास्ते की कठिनाई, कमजोरी या बीमारी के कारण हज नहीं कर सकता और नीयत रखता है कि रुकावट दूर हो जाए तो हज करूँगा, वह ऐसा ही है मानो उसने हज कर लिया।"

(अल-फ़ज़्ल, 4 मई 1922)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"चौथा आदेश हज का है। यदि यात्रा करने के लिए धन हो, रास्ते में कोई ख़तरा न हो, बाल-बच्चों की देखभाल और सुरक्षा की व्यवस्था हो सके, तो जीवन में एक बार हज करने का आदेश है।"

(अल-अज़्हार लिज़्वातिल ख़िमार, पृष्ठ 24)

फिर फ़रमाया :

"यदि ख़ुदा तआला किसी को सामर्थ्य दे तो वह हज करे। इसके लिए कई शर्तें हैं, जैसे धन हो, रास्ते में सुरक्षा हो और यदि स्त्री हो तो उसके साथ उसका पति, बेटा, भतीजा या कोई ऐसा रिश्तेदार हो जो महरम हो।"

(अल-अज़्हार ले ज़वातिल ख़िमार, पृष्ठ 47)

सन 6 हिजरी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सुल्ह हुदैबिया के अवसर पर हज के इरादे से निकले थे, लेकिन आपको हज और उमरा से रोक दिया गया। आपने हज और उमरा नहीं किया बल्कि समझौता किया और जो क़ुर्बानी के पशु आप साथ ले गए थे, उन्हें ज़बह कर दिया। आपकी सुन्नत में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी अपने पशु क़ुर्बान कर दिए। जब आपको हज से रोका गया तो आपने हज नहीं किया बल्कि शांति का मार्ग अपनाया। आपके इस कार्य ने भविष्य की महान विजयों के द्वार खोल दिए।

ईदुल-अज़्हा या क़ुर्बानी की ईद

10 ज़िलहिज्जा को ईदुल-अज़्हा मनाई जाती है। इसे क़ुर्बानी की ईद भी कहते हैं और भारतीय उपमहाद्वीप में इसे बड़ी ईद भी कहा जाता है। यह ईद क़ुर्बानी की भावना को जागृत करने वाली तथा हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की महान क़ुर्बानी की याद में मनाई जाती है। हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने स्वप्न में अपने पुत्र इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़बह करते देखा और जब उसे बाहरी रूप से पूरा करने चले तो आपने अपने आज्ञाकारी पुत्र को भी उसके लिए तैयार पाया। तब ख़ुदा तआला ने कहा कि तू अपनी यह दृष्टि पहले ही पूरी कर चुका है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ईदुल-अज़्हा के दिन यह तरीका था कि आप ईद से पहले कुछ नहीं खाते थे, जबकि ईदुल-फ़ित्र पर कुछ खाकर ईद के लिए जाया करते थे। ईदुल-अज़्हा पर क़ुर्बानी का पशु ज़बह होने के बाद उसका मांस खाते थे। आपका यह भी तरीका था कि आप ईदगाह में पशु ज़बह किया करते थे। आप दो पशु ज़बह करते, एक अपनी ओर से और एक अपनी उम्मत की ओर से।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हृदयों की पवित्रता ही सच्ची क़ुर्बानी है। मांस और रक्त सच्ची क़ुर्बानी नहीं। जहाँ सामान्य लोग पशुओं की क़ुर्बानी करते हैं, वहाँ विशेष लोग अपने हृदयों को ज़बह करते हैं। लेकिन ख़ुदा तआला ने इन क़ुर्बानियों को भी बंद नहीं किया ताकि ज्ञात हो कि इन क़ुर्बानियों का भी मनुष्य से संबंध है।"

(बराहीन अहमदिया, भाग पंचम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 21, पृष्ठ 424)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ईदुल-अज़्हा के दिन नफ़्ली रोज़े के बारे में फ़रमाते हैं :

"रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह तरीका प्रमाणित है कि आप स्वास्थ्य की अवस्था में क़ुर्बानी करके खाते थे। तथापि यह ऐसा रोज़ा नहीं कि कोई न रखे तो पापी हो जाए। यह कोई फ़र्ज़ नहीं बल्कि नफ़्ली और मुस्तहब रोज़ा है। जो रख सकता हो रखे, मगर जो बीमार, वृद्ध या किसी अन्य कारण से न रख सके वह बाध्य नहीं और न रखने से पापी नहीं होगा...... मैंने स्वास्थ्य की अवस्था में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस पर अमल करते देखा है।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 2, पृष्ठ 263)

क़ुर्बानी के पशु के लिए यह शर्तें हैं कि वह बिना दोष का हो। लंगड़ा, बीमार, कान कटा हुआ या पूरा सींग टूटा हुआ न हो। इसके अतिरिक्त वह स्वस्थ भी हो। क़ुर्बानी का समय ईद की नमाज़ के बाद आरंभ होता है और तीन दिन तक जारी रहता है। क़ुर्बानी का मांस स्वयं भी उपयोग कर सकते हैं। रिश्तेदारों और निर्धनों को भी देना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

शेष पृष्ठ 11 पर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हज बैतुल्लाह के लिए दुआ

1886 ईस्वी में जब हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो हज बैतुल्लाह के लिए रवाना होने लगे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपको एक पत्र में लिखा :

"इस तुच्छ और अयोग्य व्यक्ति की एक विनम्र प्रार्थना याद रखें कि जब आपको बैतुल्लाह की ज़ियारत ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से प्राप्त हो, तो उस मुबारक मक़ाम-ए-महमूद में इस तुच्छ बंदा-ए-ख़ुदा की ओर से इन्हीं शब्दों में विनम्रता और निर्धनता के हाथ उपस्थिति में उठाकर प्रार्थना करें कि :

ऐ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْن! तेरा एक बंदा, अत्यन्त विनम्र, तुच्छ, बहुत त्रुटियों वाला और अयोग्य ग़ुलाम अहमद, जो तेरी धरती मुल्क-ए-हिंद में है, उसकी यह प्रार्थना है कि ऐ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْن! तू मुझसे प्रसन्न हो जा और मेरी भूलों और पापों को क्षमा कर दे, क्योंकि तू अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। और मुझसे वह कार्य करा जिससे तू बहुत अधिक प्रसन्न हो जाए।

मेरे और मेरे नफ़्स के बीच पूरब और पश्चिम जितनी दूरी डाल दे और मेरी जीवन, मेरी मृत्यु, मेरी प्रत्येक शक्ति और जो कुछ मुझे प्राप्त है, सबको अपनी ही राह में लगा दे। और अपनी ही मुहब्बत में मुझे जीवित रख और अपनी ही मुहब्बत में मुझे मृत्यु दे और अपने पूर्ण अनुयायियों में मुझे उठाना।

ऐ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْن! जिस कार्य के प्रचार के लिए तूने मुझे नियुक्त किया है और जिस सेवा के लिए तूने मेरे हृदय में जोश उत्पन्न किया है, उसे अपने ही फ़ज़्ल से पूर्णता तक पहुँचा। और इस विनम्र व्यक्ति के हाथ से इस्लाम की सत्यता की दलील विरोधियों पर तथा उन सब लोगों पर पूरी कर दे जो अब तक इस्लाम की विशेषताओं से अनभिज्ञ हैं।

और इस विनम्र व्यक्ति तथा इसके सभी मित्रों, निष्ठावानों और समान विचार रखने वालों को क्षमा और दया की दृष्टि से अपनी संरक्षण की छाया में रखकर दीन और दुनिया में स्वयं उनका संरक्षक और पालनकर्ता बन जा। और सबको अपने घर-ए-रज़ा तक पहुँचा दे।

और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तथा उनकी आल और सहाबा पर अत्यधिक दरूद, सलाम और बरकतें नाज़िल कर। आमीन या रब्बुल आलमीन।"

(मकतूबात अहमदिया, जिल्द 3, पृष्ठ 28-27, नया संस्करण)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

''मेरी समस्त प्रसन्नता इसी में है और मेरी नियुक्ति का वास्तविक उद्देश्य यही है कि ख़ुदा तआला की तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा संसार में स्थापित हो।'' (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक अप्रैल 10 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अपने आका सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा तौहीद को स्थापित करने के लिए किए गए प्रयास, आपके व्यावहारिक आदर्श, अपने मानने वालों को दी गई नसीहतें और आप किस प्रकार उनकी तरबियत किया करते थे, इसके कुछ घटनाएँ प्रस्तुत करूँगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि एक व्यक्ति का बेटा मर गया और उसका एक मित्र ताज़ियत करने के लिए उसके पास गया। वह चीख मारकर रो पड़ा और उससे कहने लगा कि ख़ुदा ने मुझ पर बहुत अत्याचार किया है। मानो उसके विचार में ख़ुदा तआला ने उसका कोई अधिकार छीन लिया था।'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह बात बयान करते हुए आपने आगे फ़रमाया, ''किन्तु सोचना चाहिए कि वह कौन-सा अधिकार है जो बंदे ने ख़ुदा तआला पर स्थापित किया है। मुझे सदैव आश्चर्य आता है कि वे लोग जो अपनी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और तक़वा व पवित्रता पर गर्व करते हैं, वे तो किसी कष्ट के अवसर पर चिल्ला उठते हैं कि ख़ुदा तआला ने हम पर अत्याचार किया, किन्तु भारत का वह शराबी कवि जो धर्म से बिल्कुल अनजान था, एक सच्चाई के क्षण में, शराब का अभ्यस्त होने के बावजूद, ख़ुदा तआला का इल्हाम उसके हृदय पर उतरता है और वह कह उठता है—

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ।''

(दुनिया में तरक़्क़ी करने के गुर, अनवारुल उलूम जिल्द 12, पृष्ठ 311-312)

अतः मनुष्य को हर समय यही विचार रखना चाहिए कि जो नेमतें और जो संतान हमें मिली है, वह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के कारण मिली है और यह बात इस बात की माँग करती है कि हम सदैव अल्लाह तआला के सामने झुके रहें, उसकी तौहीद का अपने प्रत्येक कथन और कर्म से प्रदर्शन करें और हममें कभी भी थोड़ा-सा भी शिर्क का संकेत उत्पन्न न हो। कभी यह न समझें कि हमारा अल्लाह तआला पर कोई अधिकार है। थोड़ी-सी इबादत कर लेने से कोई अधिकार अदा नहीं हो जाता, बल्कि हम यह सब अपने लाभ के लिए करते हैं।

अतः जिस कवि का आपने उल्लेख किया, वह तो यही कहता है कि अल्लाह तआला ने जीवन दिया था, इस संसार में उत्पन्न किया था और हम इस संसार में आए, किन्तु उसके शुक्राने का जो अधिकार हमें अदा करना चाहिए था, वह हम अदा नहीं कर सके। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसी प्रकार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक पुत्र मुबारक अहमद — जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के छोटे पुत्र थे — की वफ़ात पर आपकी प्रतिक्रिया की घटना बयान करते हैं। कहते हैं कि ''मुबारक अहमद से आपको बहुत प्रेम था और उसकी बीमारी में आपने बहुत सेवा की। इससे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु तक को यह विचार था कि यदि मुबारक अहमद का देहांत हो गया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बहुत आघात होगा। अंतिम समय में हज़रत मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु उसकी नब्ज़ देख रहे थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि कस्तूरी लाओ, और चूँकि उसकी नब्ज़ बंद हो रही थी, इस विचार का कि उसकी वफ़ात से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बहुत आघात होगा, आप पर इतना प्रभाव हुआ कि आप'' अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ''खड़े-खड़े भूमि पर गिर पड़े।'' केवल यह सोचकर कि उसके देहांत से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कितना दुःख होगा। ''किन्तु जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ज्ञात हुआ कि मुबारक अहमद का देहांत हो गया है, तो उसी समय अत्यन्त धैर्य के साथ मित्रों को पत्र लिखने लगे कि मुबारक अहमद का देहांत हो गया है, किन्तु इस बात पर घबराना नहीं चाहिए। यह अल्लाह तआला की एक इच्छा थी, जिस पर हमें धैर्य करना चाहिए। फिर बाहर आकर मुस्कुराते हुए भाषण करने लगे कि मुबारक अहमद के संबंध में ख़ुदा तआला का जो इल्हाम था, वह पूरा हो गया।'' चुनाँचे आपका यह शेर भी है—

बुलाने वाला है सबसे प्यारा
उसी पर ऐ दिल तू जान फ़िदा कर।''

(नजात, अनवारुल उलूम जिल्द 7, पृष्ठ 65 से 66)

इसी प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत बयान करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बात मैंने अनेक बार सुनी है। आप तुर्की के सुल्तान अब्दुल हमीद ख़ान, जो पदच्युत कर दिए गए थे, का उल्लेख करते हुए फ़रमाया करते थे कि सुल्तान अब्दुल हमीद ख़ान की एक बात मुझे बहुत पसंद है।'' यद्यपि उसकी बहुत-सी बातें ग़लत थीं, फिर भी आप फ़रमाते थे कि यह बात मुझे बहुत पसंद है। वह क्या है? कि ''जब यूनान से युद्ध का प्रश्न उठा तो मंत्रियों ने बहुत-से बहाने प्रस्तुत कर दिए। वास्तव में सुल्तान अब्दुल हमीद की इच्छा थी कि युद्ध हो, किन्तु मंत्रियों की इच्छा नहीं थी, इसलिए उन्होंने बहुत-से बहाने प्रस्तुत किए। अंत में उन्होंने कहा कि युद्ध के लिए यह वस्तु भी तैयार है और वह वस्तु भी तैयार है, किन्तु किसी महत्वपूर्ण बात का उल्लेख करके कह दिया कि अमुक व्यवस्था नहीं है।'' अर्थात बातें तो कीं कि हम तैयार हैं, तैयार हैं, किन्तु यह कमी है और इस कमी के कारण युद्ध करना बहुत कठिन है। ''उदाहरण के लिए ऐसे समझ लो कि उन्होंने कहा — और सम्भवतः यही कहा होगा — कि इस समय समस्त यूरोपीय शक्तियाँ यूनान की सहायता करने पर एकमत हैं और इसका हमारे पास कोई उपचार नहीं।'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि

''जब मंत्रियों ने अपना परामर्श प्रस्तुत किया और कठिनाइयाँ बताईं तथा कहा कि अमुक वस्तु की व्यवस्था नहीं है, तो सुल्तान अब्दुल हमीद ने उत्तर दिया कि कुछ स्थान ख़ुदा के लिए भी छोड़ना चाहिए।'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुल्तान अब्दुल हमीद के इस वाक्य से बहुत आनंद लिया करते थे और फ़रमाते थे कि ''मुझे उसकी यह बात बहुत पसंद है,'' क्योंकि उसने ख़ुदा पर भरोसा किया।

(तफ़्सीर कबीर जिल्द 9, पृष्ठ 163-164, नवीन संस्करण)

तौहीद के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की गैरत की एक घटना

बयान करते हुए हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि

''मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी ने लिखित रूप में मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सिर घूमने की बीमारी थी।'' चक्कर आने की तकलीफ़ थी। ''एक हकीम के बारे में सुना गया कि वह इस रोग

के उपचार में विशेष दक्षता रखता है।'' अर्थात चक्कर की बीमारी का इलाज करने में बहुत बड़ा विशेषज्ञ है। तो ''उसे किराया भेजकर और कहीं दूर से बुलाया गया।'' खर्च देकर बुलाया गया। ''उसने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को देखा और कहा कि मैं दो दिन में आपको आराम पहुँचा दूँगा।'' यह तो कोई साधारण बात नहीं थी — दो दिन में आपको बिल्कुल ठीक कर दूँगा। ''यह सुनकर हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम अंदर चले गए और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु को पर्ची लिखी कि मैं इस व्यक्ति से हरगिज़ इलाज नहीं कराना चाहता। यह कैसी खुदाई का दावा करता है! उसे वापसी किराये के रुपए और अतिरिक्त बीस-पच्चीस रुपए भी दे दो और कह दो कि इसे विदा कर दो। चुनाँचे ऐसा ही किया गया।''

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 38, रिवायत नंबर 1038)

इसी प्रकार हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत बयान करते हुए लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि

''खुदा उनसे प्रेम करता है जो उसकी महानता और प्रतिष्ठा के लिए जोश रखते हों। ऐसे लोग एक बारीक मार्ग से चलते हैं और हर कोई उनके साथ नहीं चल सकता। जब तक खुदा के लिए जोश न हो, कोई आनंद मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता।

जब तक मनुष्य के हृदय में अल्लाह तआला के लिए व्यक्तिगत जोश न हो और मन की मलिनता तथा अपने सांसारिक लाभों और स्वार्थों के विचार से मनुष्य खाली न हो जाए, तब तक उसकी कोई इबादत और सदक़ा स्वीकार योग्य नहीं होता।''

बहुत महत्वपूर्ण बात है। जब तक मनुष्य अपने मन की मलिनता और सांसारिक लाभों तथा स्वार्थों के विचार से खाली न हो जाए, तब तक उसकी कोई इबादत और सदक़ा स्वीकार नहीं होता।

''जो व्यक्ति खुदा के लिए जोश रखता है, वह अपने समान मनुष्यों से बढ़ जाता है। ऐसे लोग खुदा से बरकतें पाते हैं।''

(ज़िक्रे हबीब, हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 182)

अतः

दुआ की स्वीकार्यता के लिए यह भी आवश्यक है कि तौहीद पर पूर्ण विश्वास और ईमान हो तथा अल्लाह तआला से उसकी मुहब्बत प्राप्त करने की दुआ सबसे पहले हो। जो लोग लिखते हैं कि हमने बहुत दुआ की, हमने यह किया, वह किया, नफ़्ल पढ़े, सदक़े दिए, फिर भी हमारी दुआ स्वीकार नहीं हुई — वे इस बात पर विचार करें। यह नुस्ख़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत बयान करते हुए एक स्थान पर कहते हैं कि ''खुदा ने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस मुहब्बत को ऐसी क़द्रदानी से सम्मानित किया जो उसी की असीम रहमत का अधिकार और उसकी अनुपम क़द्रदानी के अनुरूप थी। चुनाँचे आपको संबोधित करके'' अल्लाह तआला ''फरमाता है:

اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃِ تَوْحِیْدِیْ وَ تَفْرِیْدِیْ۔ اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃِ وَلَدِیْ۔ اِنِّیْ مَعَكَ یَابْنَ رَسُوْلِ اللّٰہِ...

अर्थात चूँकि इस युग में तू मेरी तौहीद का ध्वजवाहक है और तौहीद की खोई हुई संपत्ति को संसार में पुनः स्थापित कर रहा है, इसलिए ऐ मसीह मुहम्मदी! तू मुझे वैसा ही प्रिय है जैसे मेरी तौहीद और मेरी एकता। और चूँकि ईसाइयों ने झूठ और आरोप के रूप में अपने मसीह को खुदा का वास्तविक बेटा बना रखा है, इसलिए मेरी गैरत ने यह माँग की कि मैं तुझसे ऐसा प्रेम करूँ जो संतान के अधिकार जैसा होता है, ताकि संसार पर प्रकट हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शिष्य तक 'अत्फ़ालुल्लाह' के मकाम को प्राप्त कर सकते हैं। और चूँकि तू मेरे प्रिय मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन की सेवा में दिन-रात डूबा हुआ है और उसकी मुहब्बत में लीन है, इसलिए मैं तुझे अपने उस प्रिय के आध्यात्मिक पुत्र के रूप में अपनी असीम मुहब्बत और अपनी स्थायी संगति के सम्मान से विभूषित करता हूँ।''

(सीरत तैय्यबा, साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 13-14)

यह है उस इल्हाम का अर्थ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हुआ था, जिसे मैंने अभी पढ़ा है।

आपकी सीरत के संबंध में ही मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एक स्थान पर लिखते हैं कि

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति का मुख्य उद्देश्य इस्लाम की सेवा और तौहीद की स्थापना था

और इस युग में वास्तविक तौहीद का सबसे अधिक मुकाबला ईसाइयत से है।'' उस समय तो था, आज भी कुछ क्षेत्रों में है। ''जो तौहीद की आड़ में खतरनाक शिर्क की शिक्षा देती है और हज़रत ईसा नासरी को नऊज़ूबिल्लाह खुदा का बेटा ठहराकर खुदाए अहदियत के साथ बैठाती है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ईसाइयत के विरुद्ध बहुत जोश था और वैसे भी आपके मसीही पद का बड़ा कार्य हदीसों में 'कस्रे सलीब' ही बताया गया है। इसलिए आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर बहुत अधिक ज़ोर देते थे, क्योंकि केवल इसी एक बात के सिद्ध हो जाने से ईसाइयत का अंत हो जाता है। अर्थात वफ़ाते मसीह के परिणामस्वरूप न तो ईसा की खुदा तआलाता शेष रहती है, न त्रित्व का कोई नामोनिशान रहता है और न कफ़्फ़ारे का सिद्धांत अपनी खोखली टाँगों पर खड़ा रह सकता है। निस्संदेह हज़रत ईसा नासरी की वफ़ात का सिद्धांत स्वभावतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी सच्चाई के प्रमाण के लिए भी पहला चरण है, किन्तु इस विषय की वास्तविक महत्ता, जिसके कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस पर अधिक ज़ोर देते थे, वर्तमान ईसाइयत के खंडन'' — यह हिंदी शब्द है, जिसका अर्थ है उसका खंडन करना, उसका खण्डन करना — ''से संबंधित है। चुनाँचे आप प्रायः फ़रमाया करते थे कि

'तुम मसीह को मरने दो, क्योंकि इसी में इस्लाम का जीवन है।' ...काश! हमारे दूसरे मुस्लिम भाई इस बिंदु को समझकर कम से कम ईसाइयत के मुकाबले में तो हमारे साथ सहमत हो जाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को मानना या न मानना दूसरी बात है,'' लेकिन यहाँ तो कम से कम मान लें जहाँ इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

''ईसाइयत के झूठे सिद्धांतों और इस युग में उन सिद्धांतों के विश्वव्यापी प्रसार का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हृदय पर इतना बोझ था कि आप एक स्थान पर पीड़ा और व्यथा से व्याकुल होकर बड़े जोश से फ़रमाते हैं कि

'मैं हर समय इस चिंता में रहता हूँ कि हमारा और ईसाइयों का किसी प्रकार निर्णय हो जाए। मेरा हृदय मृत-पूजा के फ़ितने से लहूलुहान होता है और मेरी जान अत्यन्त व्याकुलता में है। इससे बढ़कर हृदय-पीड़ा का और कौन-सा अवसर होगा कि एक असहाय मनुष्य को खुदा बना दिया गया है और एक मुट्ठी मिट्टी को रब्बुल आलमीन समझ लिया गया है। मैं तो कब का इस दुःख से नष्ट हो गया होता यदि मेरा मौला और मेरा सामर्थ्यवान खुदा मुझे यह तसल्ली न देता कि अन्ततः विजय तौहीद की ही होगी।''

(सीरत तैय्यबा, साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 106 से 108)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''खुदा तआला इस बात को जानता है और वह प्रत्येक बात पर सर्वोत्तम गवाह है कि वह चीज़ जो उसकी राह में मुझे सबसे पहले दी गई, वह 'क़ल्बे सलीम' था — अर्थात ऐसा हृदय जिसका वास्तविक संबंध खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के अतिरिक्त किसी वस्तु से न था। मैं किसी समय युवा था और अब वृद्ध हो गया हूँ, किन्तु मैंने अपने जीवन के किसी भाग में खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के अतिरिक्त किसी और के साथ अपना वास्तविक संबंध नहीं पाया... इसी प्रेम की तपिश के कारण मैं कभी भी ऐसे किसी धर्म पर संतुष्ट नहीं हुआ जिसके सिद्धांत खुदा तआला की महानता और एकता के विरुद्ध हों या किसी प्रकार की तौहीन को आवश्यक बनाते हों। यही कारण है कि ईसाई धर्म मुझे पसंद नहीं आया, क्योंकि उसके प्रत्येक कदम में खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की तौहीन है। एक असहाय मनुष्य, जो अपने स्वयं के प्राणों की भी सहायता न कर सका, उसे खुदा ठहरा दिया गया।''

(हक़ीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 59-60)

हज़रत मुफ्ती फ़ज़्लुर्रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु मुहाजिर हैं। वह बयान करते हैं कि ''मेरे घर में एक के बाद एक दो लड़कियाँ पैदा हुईं।'' दो बेटियाँ पैदा हुईं लगातार। ''जो खुदा के फ़ज़्ल से'' जब वह यह बयान कर रहे

हैं, कहते हैं ''उस समय तक जीवित थीं। इसके बाद एक लड़का पैदा हुआ। वह न बोलता था और न सुनता था। पहला लड़का प्रायः बीमार रहता था। दूसरा लड़का बुद्धिमान और स्वस्थ था।'' पहले वाले का उल्लेख किया न, उसके बाद जो हुआ वह बीमार रहता था, बोलता-सुनता नहीं था। फिर दूसरा लड़का पैदा हुआ, वह स्वस्थ था। ''और उसकी आदतें तथा शक्ल-सूरत कुछ ऐसी मनमोहक थीं कि छोटी-सी आयु में वह घर के सारे काम कर लेता था और ज़रा-से संकेत से बात समझ लेता था।'' कहते हैं कि वह बहुत बुद्धिमान लड़का था। ''कुछ इन्हीं कारणों से मेरी मुहब्बत उससे बहुत बढ़ गई। पहला लड़का चार वर्ष की आयु में वफ़ात पा गया।'' जो बीमार था, वह चार वर्ष की आयु में मर गया। ''दूसरा भी'' यह जो बुद्धिमान था, ''जब साढ़े चार वर्ष का हुआ तो उसे तेज़ बुखार हुआ। मैंने बहुत इलाज किया, किन्तु कोई लाभ दिखाई न दिया। जिस दिन उसकी बीमारी को पंद्रह दिन गुज़र चुके थे, उसे सरसाम'' अर्थात Meningitis जैसी बीमारी जिसमें मस्तिष्क की झिल्लियों में सूजन हो जाती है ''हो गया। मैंने हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम की सेवा में दुआ के लिए एक पत्र लिखा कि यह मेरा बहुत प्यारा बच्चा है, इसके लिए दुआ करें कि बच जाए।''

''आप अलैहिस्सलाम ने उसके उत्तर में लिखा कि मैं इन शा अल्लाह दुआ करूँगा, पर यदि तक़दीरे मुबरम है तो टल नहीं सकती।'' साथ यह भी लिख दिया। ''यह पढ़कर मुझे विश्वास हो गया कि यह बच्चा बच नहीं सकता। चुनाँचे चौथे दिन उसकी अवस्था बहुत नाज़ुक थी और हुज़ूर अलैहिस्सलाम उस दिन गुरदासपुर वाली तारीख़ पर जाने वाले थे। चूँकि मैं प्रत्येक तारीख़ पर'' हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ''साथ जाया करता था, इसलिए मैं भी जाने के लिए उपस्थित हुआ। जब आप अलैहिस्सलाम घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो पहले मुझे संबोधित करके फ़रमाया, 'तुम्हारे बच्चे का क्या हाल है?' मैंने अर्ज़ किया, 'हुज़ूर! चलकर देख लें।' साथ ही घर था। देख लें, बहुत बुरी हालत में है। ''जब आप अलैहिस्सलाम ने घर आकर बच्चे को देखा तो फ़रमाया, 'यह बहुत बीमार है, आज तुम गुरदासपुर न जाओ।' आज तुम हमारे साथ न जाओ।'' आप अलैहिस्सलाम अपने सफ़र पर तशरीफ़ ले गए ''और दूसरे दिन लगभग चार बजे बच्चा वफ़ात पा गया। उसके अगले दिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम दस बजे गुरदासपुर से वापस तशरीफ़ ले आए। मैं भी सुनकर मुसाफ़हे के लिए आगे बढ़ा। मेरी गोद में छोटी लड़की थी जो उस लड़के से छोटी थी। मुझे देखकर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, 'मुझे तुम्हारे बच्चे की वफ़ात का बहुत दुःख है, किन्तु मुझे यह विचार था कि तुम्हारी मुहब्बत उसके साथ शिर्क की सीमा तक पहुँच गई थी, इसलिए उसका जीवित रहना असंभव प्रतीत होता था। बहरहाल, मैंने तुम्हारे बच्चे के लिए बहुत दुआएँ की थीं। अल्लाह तुम्हें उसका उत्तम बदला देगा और वह सुनने वाला, बोलने वाला होगा।' '' नया बच्चा देगा जो सुनने वाला और बोलने वाला होगा, पूरी तरह स्वस्थ होगा।

''चुनाँचे उसके बाद फ़ज़्ल करीम पैदा हुआ,'' उनके एक बेटे का नाम फ़ज़्ल करीम था, ''फिर अब्दुल हफ़ीज़, उसके बाद दो गर्भ गिर गए, दोनों लड़के थे,'' वे गिर गए, लेकिन दो बच्चे जीवित पैदा हुए। ''उसके बाद मुहम्मद अब्दुल्लाह, उसके बाद अब्दुल करीम'' पैदा हुआ, ''और उसके बाद अहमद पैदा हुआ। और खुदा के फ़ज़्ल से ये पाँचों'' बच्चे उसके बाद पैदा हुए ''जीवित हैं।''

अतः आप अलैहिस्सलाम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी हर समय तौहीद का पाठ पढ़ाते थे और फिर उनकी दिलदारी के लिए दुआ भी की, और अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार करते हुए उन्हें पाँच बेटों से भी सम्मानित किया।

(सीरत अहमद, कुदरतुल्लाह सनौरी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 168 से 170)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''खुदा तआला चाहता है कि उन सभी आत्माओं को, जो पृथ्वी की विभिन्न आबादियों में बसी हुई हैं — चाहे यूरोप हो या एशिया — उन सबको, जो नेक स्वभाव रखते हैं, तौहीद की ओर खींचे और अपने बंदों को एक ही दीन पर एकत्र करे। यही खुदा तआला का उद्देश्य है, जिसके लिए मुझे संसार में भेजा गया है। अतः तुम इस उद्देश्य का अनुसरण करो, किन्तु नम्रता, सदाचार और दुआओं पर बल देते हुए।''

(अल-वसिय्यत, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 306-307)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''मेरी समस्त प्रसन्नता इसी में है और मेरी नियुक्ति का वास्तविक उद्देश्य यही है कि खुदा तआला की तौहीद और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा संसार में स्थापित हो।''

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 85, संस्करण 2022)

हज़रत पीर इफ्तिखार अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी सीरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक ख़ादिम का नाम पीराँ दत्ता था।'' कहते हैं, ''हम सब उन्हें इसी नाम से पुकारते थे — पीराँ दत्ता — किन्तु हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब बुलाते तो 'पीरी दत्ता' फ़रमाते थे।'' पीरी दत्ता, पीराँ दत्ता नहीं बल्कि पीरी दत्ता — ''अर्थात मेरा पीर अल्लाह का दिया हुआ।''

यह वही तौहीद है जिसके बारे में हुज़ूर अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला फरमाता है:

خُذُوا التَّوۡحِيۡدَ اَلتَّوۡحِيۡدَ يَا اَبۡنَاءَ الۡفَارِسِ

''ऐ इब्नाए फ़ारिस! तौहीद को पकड़ो, तौहीद को पकड़ो।''

(इफ्तिख़ारुल हक़ या इनआमाते ख़ुदावंदी, पृष्ठ 229)

अतः

यह इल्हाम अपनी स्थिरता और आंतरिक उन्नति के लिए आपकी नस्ल, बल्कि प्रत्येक मानने वाले को अपने सामने रखना चाहिए। प्रत्येक बैअत में आने वाले को इसे सामने रखना चाहिए। आपकी बैअत में आकर सब आपके अब्ना में सम्मिलित हो गए हैं, बच्चों में सम्मिलित हैं, नस्ल में सम्मिलित हैं। यदि तौहीद को पकड़े रखेंगे तो दीन और दुनिया दोनों में सम्मान मिलेगा, अन्यथा न कोई रक्त-संबंध लाभ देता है और न केवल बैअत करना लाभ देता है।

हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

''पहली बार जब मैं, हकीम अब्दुल अज़ीज़ और हकीम अता मुहम्मद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में उपस्थित हुए, उन दिनों भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम गुरदासपुर में तशरीफ़ रखते थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम कमरे से बाहर तशरीफ़ लाने लगे तो हम तीनों दरवाज़े के पास खड़े थे। मैंने और हकीम अब्दुल अज़ीज़ साहिब ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को अस्सलामो अलैकुम अर्ज़ करके मुसाफ़हा किया, किन्तु भाई अता मुहम्मद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कदमों पर गिर पड़े। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें बाँह से पकड़कर उठाया और फरमाने लगे कि

'अल्लाह तआला ने मुझे इस युग में इसी शिर्क को मिटाने के लिए भेजा है। पीरों के पाँव चूमना शिर्क है।'

फिर आपने उनसे भी मुसाफ़हा किया।''

(रिवायाते अस्हाबे अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 172)

इसी प्रकार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

''क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ साहिब पेशावरी ने मुझे पत्र द्वारा सूचना दी कि जब मैं प्रारम्भ में कादियाँ गया तो एक व्यक्ति अपने लड़के को हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम के सामने मुलाक़ात के लिए लाया। जब वह लड़का हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम से मुसाफ़हा करने के लिए आगे बढ़ा तो सम्मान प्रकट करने के लिए हज़रत के पाँव को हाथ लगाने लगा। इस पर हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम ने अपने मुबारक हाथों से उसे ऐसा करने से रोका और मैंने देखा कि आपका चेहरा लाल हो गया और आपने बड़े जोश में फ़रमाया कि

'अंबिया संसार में शिर्क मिटाने आते हैं और हमारा कार्य भी शिर्क मिटाना है, न कि शिर्क स्थापित करना।''

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 295, रिवायत नंबर 319)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''मैं इस बात का कठोर विरोधी हूँ कि कोई मेरी तस्वीर खींचे।''

तस्वीर के बारे में भी यहाँ स्पष्टता हो जाती है। बहुत-से लोग ग़लत तरीके से अपनी तस्वीरें भी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भी और अपने प्रियजनों तथा रिश्तेदारों की भी रखते हैं, इसलिए मैं यह बयान कर रहा हूँ। फ़रमाते हैं:

''मैं इस बात का कठोर विरोधी हूँ कि कोई मेरी तस्वीर खींचे और उसे बुतपरस्तों की तरह अपने पास रखे या प्रकाशित करे। मैंने हरगिज़ ऐसा आदेश नहीं दिया कि कोई ऐसा करे और मुझसे अधिक बुतपरस्ती और तस्वीर-परस्ती

का कोई शत्रु नहीं होगा। किन्तु मैंने देखा है कि आजकल यूरोप के लोग जिस व्यक्ति की रचना को देखना चाहते हैं, पहले उसकी तस्वीर देखने के इच्छुक होते हैं, क्योंकि यूरोप के देशों में इल्मे फ़िरासत को बहुत उन्नति प्राप्त है और उनमें से अधिकांश केवल तस्वीर देखकर पहचान सकते हैं कि ऐसा दावेदार सच्चा है या झूठा। और वे लोग हज़ारों कोस की दूरी के कारण मुझ तक पहुँच नहीं सकते और न मेरा चेहरा देख सकते हैं। अतः उस देश के अहले फ़िरासत तस्वीर के माध्यम से मेरे आंतरिक हालात पर विचार करते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्होंने यूरोप या अमेरिका से मुझे पत्र लिखे हैं और अपने पत्रों में लिखा है कि हमने आपकी तस्वीर को ध्यान से देखा और इल्मे फ़िरासत के माध्यम से हमें मानना पड़ा कि जिसकी यह तस्वीर है वह झूठा नहीं हो सकता।''

''और अमेरिका की एक स्त्री ने मेरी तस्वीर देखकर कहा'' — उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा कि यह तस्वीर देखकर — ''कि यह येसू अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम की तस्वीर है। अतः इसी उद्देश्य और इसी सीमा तक मैंने इस प्रथा के जारी रहने पर विवश होकर मौन धारण किया।''

इसीलिए मैंने तस्वीर खिंचवाने की अनुमति दी है, अन्यथा यदि शिर्क फैलने लगे तो पूर्णतः मना है। फ़रमाया:

''وَاِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ''

अर्थात कर्मों का आधार नीयतों पर है।

''और मेरा मत यह नहीं है कि तस्वीर की मनाही पूर्णतः निश्चित है।'' मैं यह भी नहीं कहता कि तस्वीर खींचना हराम है। ''कुरआन शरीफ़ से सिद्ध है कि जिन्नों का समूह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए तस्वीरें बनाता था और बनी इस्राईल के पास लंबे समय तक अंबिया की तस्वीरें रहीं, जिनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भी तस्वीर थी। और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तस्वीर एक रेशमी कपड़े पर जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने दिखलाई थी। और पानी में कुछ पत्थरों पर जानवरों की तस्वीरें प्राकृतिक रूप से छप जाती हैं।''

जहाँ भूकम्प आते हैं, वहाँ पहाड़ों में जहाँ जानवर दब जाते हैं, उनकी आकृतियाँ अंकित हो जाती हैं।

''और यह यंत्र जिसके माध्यम से अब तस्वीर ली जाती है'' अर्थात कैमरा ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में आविष्कृत नहीं हुआ था और यह अत्यन्त उपयोगी यंत्र है, जिसके माध्यम से कुछ रोगों की पहचान हो सकती है।''

अतः केवल तस्वीरों की बात नहीं, बल्कि आपने फ़रमाया कि इससे रोगों की पहचान भी हो सकती है। अब तो यह व्यवस्था और अधिक आगे बढ़ गई है। उस समय तो एक्स-रे का ज़माना था। फ़रमाया:

''एक और यंत्र तस्वीर का निकला है, जिसके माध्यम से मनुष्य की समस्त हड्डियों की तस्वीर ली जाती है'' अर्थात एक्स-रे के माध्यम से ''और जोड़ों के दर्द तथा नक़रस आदि रोगों की पहचान के लिए इस यंत्र से तस्वीर ली जाती है और रोग की वास्तविकता ज्ञात होती है।''

अब तो स्कैनिंग, एम.आर.आई. आदि और भी बहुत-सी चीज़ें हो गई हैं। उस समय तक जिन साधनों का प्रयोग था, उनकी आपने व्याख्या की कि यह तो अत्यन्त लाभकारी यंत्र है। इसलिए यह कहना कि उसके निकट भी न जाओ, यह भी ग़लत है। उद्देश्य नेक होना चाहिए। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ। जब नीयत सही है तो ठीक है। शिर्क नहीं होना चाहिए।

फ़रमाया:

''इसी प्रकार फ़ोटो के माध्यम से बहुत-से वैज्ञानिक लाभ प्रकट हुए हैं।''

सामान्य फ़ोटो के माध्यम से भी हुए हैं। ''चुनाँचे कुछ अंग्रेज़ों ने फ़ोटो के माध्यम से संसार के सभी जीवों, यहाँ तक कि विभिन्न प्रकार की टिड्डियों की तस्वीरें और हर प्रकार के पक्षियों और चौपायों की तस्वीरें अपनी पुस्तकों में छाप दी हैं।''

और आजकल तो विभिन्न चैनल भी चल रहे हैं, जैसे National Geographic आदि। वे तो अत्यन्त विस्तार से जानवरों की तस्वीरें लेकर विवरण भी देते हैं। बहरहाल, आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

''जिससे ज्ञान की उन्नति हुई है। अतः क्या यह कल्पना की जा सकती है कि वह ख़ुदा, जो ज्ञान की प्रेरणा देता है, ऐसे यंत्र के प्रयोग को हराम ठहराए जिसके माध्यम से बड़े-बड़े कठिन रोगों की पहचान होती है और अहले फ़िरासत के लिए हिदायत पाने का एक साधन बन जाता है। यह सब अज्ञानताएँ हैं जो फैल गई हैं।''

फ़ोटो को हराम और निषिद्ध कहना भी ग़लत है। हाँ, नीयत नेक हो।

फ़रमाया:

''हमारे देश के मौलवी चहरेशाही सिक्कों के रुपए, दोन्नियाँ, चौन्नियाँ और अठन्नियाँ अपनी जेबों और घरों से बाहर क्यों नहीं फेंक देते?''

यदि ये मौलवी इतने कठोर विचार वाले हैं, तो हमारे सिक्कों, रुपयों और नोटों पर जो बादशाहों की तस्वीरें छपी होती हैं, उन्हें घरों से बाहर क्यों नहीं फेंक देते? क्यों उन्हें अपनी जेबों में लिए फिरते हैं?

''क्या उन सिक्कों पर तस्वीरें नहीं हैं? अफ़सोस कि ये लोग व्यर्थ और अतार्किक बातें करके विरोधियों को इस्लाम पर हँसने का अवसर देते हैं। इस्लाम ने सभी व्यर्थ कार्यों और उन कार्यों को हराम किया है जो शिर्क के समर्थक हों, न कि उन कार्यों को जो मानव-ज्ञान को उन्नति देते हैं, रोगों की पहचान का माध्यम बनते हैं और अहले फ़िरासत को हिदायत के निकट कर देते हैं। लेकिन इसके बावजूद

मैं हरगिज़ पसंद नहीं करता कि मेरी जमाअत के लोग बिना ऐसी आवश्यकता के, जो विवश कर दे, मेरे फ़ोटो को सामान्य रूप से प्रकाशित करना अपना व्यवसाय और पेशा बना लें।''

यदि उद्देश्य नेक हो तो ठीक है, किन्तु तस्वीरों को कमाई का साधन न बना लो।

''क्योंकि इसी प्रकार धीरे-धीरे बिदअतें उत्पन्न हो जाती हैं और शिर्क तक पहुँचती हैं। इसलिए मैं अपनी जमाअत को यहाँ भी नसीहत करता हूँ कि जहाँ तक उनके लिए संभव हो, ऐसे कार्यों से दूर रहें।

कुछ लोगों के मैंने कार्ड देखे हैं और उनकी पीठ के किनारे पर अपनी तस्वीर देखी है। मैं ऐसी प्रसिद्धि का कठोर विरोधी हूँ और मैं नहीं चाहता कि हमारी जमाअत में से कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करे। किसी सही और उपयोगी उद्देश्य के लिए कार्य करना एक बात है और हिंदुओं की तरह अपने बुज़ुर्गों की तस्वीरें जगह-जगह दीवारों और दरवाज़ों पर लगाना दूसरी बात है। सदैव देखा गया है कि ऐसे व्यर्थ कार्य शिर्क की ओर ले जाने वाले होते हैं और उनसे बड़ी-बड़ी बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं, जैसा कि हिंदुओं और ईसाइयों में उत्पन्न हो गईं। और मुझे आशा है कि जो व्यक्ति मेरी नसीहतों को सम्मान और आदर की दृष्टि से देखता है और मेरा सच्चा अनुयायी है, वह इस आदेश के बाद ऐसे कार्यों से दूर रहेगा, अन्यथा वह मेरी हिदायतों के विपरीत चलता है और शरीअत के मार्ग में उद्दंडता से कदम रखता है।''

(बराहीने अहमदिया, भाग पंचम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 21, पृष्ठ 365 से 367)

अतः हमें बहुत ध्यान से यह देखना चाहिए कि हमारा तस्वीर लगाने का उद्देश्य क्या है। किसी भी प्रकार यह उद्देश्य शिर्क की ओर ले जाने वाला न हो। तस्वीरों को सलाम करना, उनके आगे झुकना — यह सब मुशरिकाना विचार हैं।

हिंदुओं में यही होता है। कुछ लोग अपने दिवंगत लोगों की पुरानी तस्वीरें लगाते हैं और उन पर हार भी डाल देते हैं। यहाँ तक कि हमारे अंदर भी कुछ स्थानों पर यह प्रथा हो गई है कि जब परिवार का समूह-चित्र खिंचवाते हैं तो कुछ लोग अपने दिवंगत प्रियजनों की तस्वीरें बनवाकर एक बड़े फ्रेम में अपने साथ रख लेते हैं कि यह हमारे बुज़ुर्ग हैं जो वफ़ात पा गए, उनकी तस्वीर भी हमारे साथ सम्मिलित हो गई है। यह सब शिर्क है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह ग़लत बातें हैं, यह बिदअतें हैं और इनसे बचना चाहिए। मुझे कुछ रिपोर्टें भी मिलती हैं कि कुछ लोग विवाह की तस्वीरों में भी इस प्रकार तस्वीरें खिंचवा लेते हैं।

केवल नेक उद्देश्य के लिए या अपनी स्मृति के रूप में अपने एल्बमों में रखने के लिए यदि तस्वीरें खिंचवाते हैं तो यह जायज़ है, किन्तु इसे एक बिदअत बना लेना और केवल लगाकर फिर उसे देखते रहना, सुबह उठकर सलाम करना — ये बातें ग़लत हैं, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है।

हज़रत सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

''अमेरिका और विलायत के कुछ लोगों ने इच्छा व्यक्त की थी कि हम मुद्दई मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर देखना चाहते हैं, इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम का फ़ोटो लिया गया था। यहाँ अब्दुल मुही नाम के एक अरब रहते

थे। उन्होंने बहुत-से कार्ड छपवाए और उन पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की शबीह थी।'' अर्थात उस पर तस्वीर प्रकाशित कर दी। ''जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम को यह ज्ञात हुआ'' कि कार्डों और पोस्टकार्डों पर तस्वीर छपी है, ''तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम बहुत अप्रसन्न हुए और फ़रमाया कि

'हमने एक दीन की आवश्यकता के लिए अपनी तस्वीर या फ़ोटो खिंचवाया था। हम इसे अत्यन्त नापसंद करते हैं कि हमारी तस्वीर को जीविका का साधन बनाया जाए, जो मुनजिर बिशिर्क'' अर्थात शिर्क की ओर ले जाने वाला ''हो सकता है।'

चुनाँचे वे कार्ड नष्ट कर दिए गए।''

(रिवायाते अस्हाबे अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 408)

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

''जब मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की और मैंने हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम की सेवा में यह लिखा कि मैं इस प्रकार के वज़ीफ़े किया करता हूँ और यह भी अर्ज़ किया कि जब से मैं बैअत करके आया हूँ, उस ओर के पीर — जिनके मुरीद उनके कहने से उनका तसव्वुर पकाते हैं — मैं इस विचार से कि जब साधारण पीरों का उनके मुरीद तसव्वुर पकाते हैं तो मेरे पेशवा और मुर्शिद, जो ख़ुदा के मसीह मौऊद और इमाम महदी हैं, मैं उनका तसव्वुर क्यों न पकाऊँ।''

अर्थात अपने मन में आपकी तस्वीर बैठा लूँ और फिर प्रतिदिन उसी तसव्वुर के माध्यम से अपने उद्देश्य पूरे करने की कोशिश करूँ।

''आपका तसव्वुर उन सब पीरों के तसव्वुर से अधिक बरकत वाला, लाभदायक और उपयुक्त होगा।''

आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप अलैहिस्सलाम तो मसीह मौऊद हैं और बाकी पीर-फ़क़ीर तो पता नहीं सही भी हैं या नहीं। लोग उनका तसव्वुर करते फिरते हैं, तो मैं क्यों न आपका तसव्वुर हर समय अपने दिल में रखूँ।

''जब मैंने यह पत्र हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम की सेवा में लिखा,'' राजेकी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, ''तो हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ का लिखा हुआ पत्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से प्राप्त हुआ, जिसमें यह लिखा था कि:

'तसव्वुरे मख़्लूक़ से शिर्क के अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं निकलता।'

यह तसव्वुर जो तुम करते हो, इससे शिर्क के सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं होगा।

'अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए अल्लाह का नाम ही पर्याप्त है और दरूद शरीफ़ वही पढ़ना चाहिए जिस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत की मुहर हो।'

उस इलानामे के प्राप्त होने के बाद मैंने उसी समय तसव्वुर को भी त्याग दिया और पूर्व के समस्त वज़ीफ़ों का सिलसिला भी तत्काल बंद कर दिया।''

(रिवायाते अस्हाबे अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 329-330)

हज़रत मास्टर सय्यद नज़ीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

''मुझसे सय्यद फ़ज़्ल शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, मरहूम मुहाजिर कादियाँ ने बयान किया कि एक बार एक मित्र ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कीमियागरी के संबंध में पूछा तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कीमियागर रोज़ी की तलाश में यूँ मारे-मारे फिरते हैं, किन्तु वे उन सही साधनों को नहीं अपनाते जो अल्लाह तआला ने जायज़ रूप से रोज़ी प्राप्त करने के लिए निर्धारित किए हैं। कीमियागरों को मक़ामे तवक्कुल प्राप्त नहीं होता, तभी तो वे सही और जायज़ साधनों को छोड़कर स्वयं एक मार्ग बना लेते हैं और यह नहीं जानते कि ख़ुदा फरमाता है:

فِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ۔ (الذاريات:23)

हम तो ऐसे मनहूसों को सबसे बड़ा मुशरिक समझते हैं।''

अल्लाह तआला तो आकाश से रोज़ी देता है जैसा कि उसने वादा किया है, किन्तु वह उन्हीं को मिलती है जो उसकी ओर झुकने वाले हैं। फ़रमाते हैं:

''ख़ुदा अपने पाक कलाम क़ुरआन-ए-करीम में मोमिन को एक कीमिया का नुस्ख़ा बताता है, जिस पर अमल करने से प्रत्येक मनुष्य वास्तविक कीमियागर बन जाता है और ख़ुदा उसकी प्रत्येक आवश्यकता स्वयं पूरी करता रहता है। चुनाँचे ख़ुदा फरमाता है:

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ۔ (الطلاق:3-4)

देख लो, जब मुत्तक़ी को संसार की समस्त नेमतें दी जाती हैं तो फिर वह किसका मुहताज हो सकता है।''

जो तक़्वा अपनाते हैं, उनके लिए अल्लाह तआला ऐसे साधन उत्पन्न कर देता है और ऐसी जगहों से रोज़ी प्रदान करता है, जहाँ से उन्हें कल्पना भी नहीं होती। अतः फ़रमाया कि जब मुत्तक़ी को संसार की नेमतें मिल जाती हैं तो फिर वह किसका मुहताज रह सकता है।

''मैं तो कहता हूँ कि यदि कीमियागर वह समय, जो वे कीमियागरी में नष्ट करते हैं, अपने पैदा करने वाले के लिए व्यतीत करें, तो अपनी सब मनचाही इच्छाएँ पा लें, बशर्ते कि वे सही रूप से तक़्वा पर स्थापित हो जाएँ।''

(रिवायाते अस्हाबे अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 179)

नेक स्वभाव लोगों पर आपकी तौहीद की शिक्षाओं और उसके लिए आपके आचरण का किस प्रकार प्रभाव पड़ता था —

इस विषय में एक मुख़लिस बुज़ुर्ग की रिवायत हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान की है।

''मीर अब्दुर्रहमान साहिब, रेंज अफ़सर बारामुला कश्मीर ने लिखित रूप में मुझसे बयान किया कि मेरे वालिद साहिब पहले हनफ़ी थे, फिर अहले हदीस हो गए। उस समय वे अपने मित्र मौलवी मुहम्मद हसन साहिब मरहूम निवासी आसनूर से कहा करते थे कि हम लोग अब बड़े मुवह्हिद होने का दावा करते हैं, सम्भव है कि कोई ऐसी जमाअत और निकल आए जो हमें भी मुशरिक ठहराए।''

वालिद साहिब फ़रमाते थे कि चुनाँचे ऐसा ही हुआ, क्योंकि हम लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मृतकों को जीवित करने वाला और पक्षियों का सृष्टिकर्ता मानते हैं। किन्तु जब मेरे कानों ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह शेर सुना:

है वही अक्सर परिंदों का ख़ुदा
उस ख़ुदादानी पे तेरे मरहबा
मौलवी साहब! यही तो तौहीद है
सच कहो किस देव की तक़्लीद है?

उस समय मुझे होश आया और मैंने तुम दोनों भाइयों को श्रीनगर अपने मामूँ के पास छोड़ा और पैदल कादियाँ चला गया तथा वहाँ बैअत से सम्मानित हुआ।''

इसी बात ने मुझे तबलीग़ कर दी।

(सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 160-161, रिवायत 1229)

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

''संभवतः सन् 1901 का उल्लेख है कि एक बार मैं हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम की बारगाह में उपस्थित था कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने तौहीदे बारी तआला पर एक तक़रीर फ़रमाई और उसमें इरशाद किया कि

'कुछ लोग किसी के एहसान पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे बिना ही جَزَاكَ اللّٰهُ कह देते हैं, हालाँकि यदि गहराई से देखा जाए तो माअरफ़त के अनुसार यह शब्द भी अपने भीतर एक प्रकार के शिर्क का पहलू रखता है, क्योंकि एहसान करने वाले की सत्ता और वह वस्तु जिसके माध्यम से वह मुह्सिन बना है, वह भी वास्तव में अल्लाह तआला की पैदा की हुई चीज़ें हैं। इसलिए जिस पर एहसान किया गया हो, उसे चाहिए कि جَزَاكَ اللّٰهُ कहने से पहले अल्लाह तआला की प्रशंसा और स्तुति बयान करे और एहसान होने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहे, क्योंकि माअरफ़त और वास्तविकता के अनुसार यह आवश्यक है कि सबसे पहले अस्बाब के सृष्टिकर्ता का शुक्र अदा किया जाए।'

फिर جَزَاكَ اللّٰهُ उस व्यक्ति को भी कह दे।''

(हयाते क़ुदसी, पृष्ठ 134)

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब कादियानी रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लाहौर के अंतिम सफ़र के विवरण पर आधारित एक लेख में लिखते हैं कि

''दिन चढ़ने पर आयोजकों ने दावत की तैयारियाँ आरम्भ कीं और धीरे-धीरे सम्मानित मेहमानों और प्रतिष्ठित लोगों की सवारियाँ आने लगीं, किन्तु हज़रत की तबीयत'' — हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वहाँ भाषण करना था — ''लगातार अत्यन्त कमज़ोर और निढाल थी तथा दुर्बलता और

कमजोरी का यह हाल था कि उसकी उपस्थिति में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के भाषण कर सकने की बिल्कुल आशा न थी। इसी विचार से हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने हज़रत मौलाना मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु को संदेश भेजा कि आप ही आने वाले मेहमानों की आध्यात्मिक दावत का कुछ प्रबंध करें। चुनाँचे समय पर हज़रत मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भाषण आरम्भ कर दिया, किन्तु थोड़ी ही देर बाद वह माहे मुनव्वर और ख़ुरशीदे अनवर स्वयं हमारे बीच प्रकट हो गया।''

अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थोड़ी देर बाद स्वयं तशरीफ़ ले आए।

''हज़रत मौलवी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भाषण बंद किया और हुज़ूर पुरनूर ने खड़े होकर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए लगभग तीन घंटे तक ऐसी प्रभावशाली, ज्ञान और माअरफ़त से भरपूर तक़रीर फ़रमाई कि अपने तो अपने, पराए भी वाह-वाह कर उठे और इतने ध्यान से सुनते रहे मानो सम्मोहित थे। उस आध्यात्मिक भोज का ऐसा आनंद उन्हें अनुभव हुआ कि उसने उन्हें शारीरिक भोजन से भी बेपरवाह कर दिया... हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तक़रीर में ऐसी रवानी थी कि नोट करना कठिन हो रहा था और बयान में इतनी शक्ति और शान थी कि भरी सभा में किसी के साँस लेने की आहट भी महसूस नहीं होती थी। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम इतने जोश से तक़रीर फरमा रहे थे कि भाषण के साथ-साथ स्वयं भी श्रोताओं की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। मैंने अपनी आँखों से देखा और अच्छी तरह ध्यान दिया कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम मेज़ से कई बार कुछ-कुछ कदम आगे बढ़ जाते थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम मेज़ को आगे लेकर नहीं खड़े थे, बल्कि मेज़ हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पीछे थी।''

अर्थात जो मेज़ लगी हुई थी, उसके पीछे खड़े होकर आप अलैहिस्सलाम भाषण नहीं दे रहे थे, बल्कि आगे खड़े होकर तक़रीर कर रहे थे। इसलिए तक़रीर के दौरान जोश में एक-दो कदम आगे भी बढ़ जाते थे।

''हुज़ूर अलैहिस्सलाम की यह तक़रीर डॉक्टर सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह साहिब के मकान के आँगन में, अधिक से अधिक, हुज़ूर अलैहिस्सलाम के विसाल से लगभग दस दिन पहले हुई थी,'' जिसे 'तकमीले तबलीग़' और 'इतमामे हुज्जत' के नाम से याद किया जाता था। ''और एक अंग्रेज़ माहिरे उलूमे हैअत से मुक़ालमा ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब के मकान की ऊपरी मंज़िल में इससे पहले हो चुका था।''

अर्थात वह बड़ा तबलीगी दौरा था।

''इन तक़रीरों के अतिरिक्त भी कई छोटी-बड़ी तक़रीरें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाईं...''

फिर लिखते हैं कि इसी दौरान ''कुछ हिंदू स्त्रियाँ 'पैग़ामे सुल्ह' की रचना के समय हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दर्शन के उद्देश्य से एक प्रतिनिधिमंडल के रूप में उपस्थित हुईं, जबकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम डॉक्टर सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह साहिब के मकान में तशरीफ़ रखते थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम अत्यन्त व्यस्त थे, इसलिए उन्हें शीघ्र विदा करना चाहा, किन्तु उन्होंने आग्रह किया और किसी नसीहत की प्रार्थना कुछ ऐसे भाव से की कि

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद उनकी प्रार्थना स्वीकार करके तौहीद की शिक्षा दी और बुतपरस्ती से रोका। ख़ुदा से दुआ और प्रार्थना करने की ताकीद फ़रमाई।

यह घटना बिल्कुल अंतिम एक-दो दिनों की है। वास्तव में वे स्त्रियाँ बहुत देर ठहरना और हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक से बहुत कुछ सुनना चाहती थीं, किन्तु हुज़ूर अलैहिस्सलाम की अत्यन्त व्यस्तता के कारण विवश होकर अनिच्छा से शीघ्र चली गईं।

इसी प्रकार हुज़ूर अलैहिस्सलाम की एक और तक़रीर अपने कुछ वाक्यों तथा अंतिम होने के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध और ख़ुद्दाम की ज़बान पर रही, जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था:

'ईसा मसीह को मरने दो, क्योंकि इसी में इस्लाम का जीवन है। मसीह मुहम्मदी को आने दो, क्योंकि इसी में इस्लाम की महानता है।''

(ततिम्मा सीरतुल महदी, जिल्द 2, पृष्ठ 391-394)

यह थी आपकी वह तड़प जो तौहीद के क़ियाम के लिए थी। बीमारी और व्यस्तता होने के बावजूद इस्लाम का पैग़ाम और तौहीद का संदेश पहुँचाने के लिए आपने किसी बात की कोई परवाह नहीं की।

अतः तौहीद का संदेश पहुँचाने और उसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाने के लिए पूरी कोशिश करना ही आज मसीह मुहम्मदी के ग़ुलामों का काम है। अल्लाह तआला हमें यह कार्य करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

दुनिया के हालात और विशेष रूप से मुस्लिम दुनिया के हालात के लिए बहुत दुआ की आवश्यकता है।

हर किसी को पता ही है कि क्या हो रहा है। युद्धविराम कहने को तो हुआ है, लेकिन यह लंबे समय तक टिकता हुआ दिखाई नहीं देता, बल्कि अभी से इसमें दरारें पड़नी शुरू हो चुकी हैं। इज़राइली सरकार की कोशिश है कि किसी तरह लेबनान पर हमला करके ईरानियों को उकसाया जाए और वे जवाब दें। अब तो कुछ यूरोपीय नेताओं ने भी उसके इस कृत्य की निंदा की है। कम से कम किसी ने तो आवाज़ उठाई है। उन लोगों ने कुछ हद तक नैतिकता का प्रदर्शन किया है, लेकिन यह यहीं तक सीमित रहेगा। उनमें बस इतनी ही नैतिकता है। इससे अधिक न तो वे प्रयास करना चाहते हैं और न ही उनमें साहस और शक्ति है। बहरहाल

हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला मुस्लिम दुनिया पर रहम फरमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

इसका उत्तर ख़ुदा तआला ने इस आयत में यह दिया है कि क़ुर्बानियों में यह बुद्धि नहीं कि उनका मांस या उनका रक्त ख़ुदा तआला तक पहुँचता है, बल्कि इसमें बुद्धि यह है कि उनकी वजह से मनुष्य के हृदय में तक़वा उत्पन्न होता है और वही तक़वा ख़ुदा तआला को प्रिय है।

अतः वे लोग जो बकरे, ऊँट या गाय की क़ुर्बानी करके यह समझ लेते हैं कि उन्होंने ख़ुदा तआला को प्राप्त कर लिया, वे भूल करते हैं। ख़ुदा तआला स्पष्ट रूप से फ़रमाता है कि यह कोई बात नहीं कि स्वयं पशु ज़बह किया और स्वयं ही खा लिया। इससे ख़ुदा तआला को क्या प्राप्त हुआ?

यह तो चित्रात्मक भाषा में एक सत्य का प्रदर्शन है, जिसके भीतर बहुत गहरी बुद्धि छिपी हुई है। जैसे चित्रकार सदैव चित्र बनाते हैं, लेकिन उनका उद्देश्य केवल चित्र बनाना नहीं होता, बल्कि उनके माध्यम से राष्ट्र के सामने कुछ महत्वपूर्ण विषय प्रस्तुत करना होता है।

चुनाँचे कभी वे ज़ंजीर बनाते हैं, जिससे अभिप्राय राष्ट्रीय एकता होता है और कभी वे सूर्योदय का दृश्य दिखाते हैं और उसका अर्थ राष्ट्रीय उन्नति होता है।

इसी प्रकार यह बाहरी क़ुर्बानी भी एक चित्रात्मक भाषा है, जिसका अर्थ यह होता है कि पशु ज़बह करने वाला अपने नफ़्स की क़ुर्बानी प्रस्तुत करने के लिए तैयार है। अतः जो व्यक्ति क़ुर्बानी करता है, वह मानो इस बात की घोषणा करता है कि मैं ख़ुदा तआला की राह में सब कुछ क़ुर्बान कर दूँगा।

इसके बाद दूसरा चरण यह होता है कि मनुष्य जिस बात को चित्रात्मक भाषा में स्वीकार करे, उसे व्यवहार में भी पूरा करके दिखा दे। क्योंकि केवल नकल, जिसके साथ वास्तविकता न हो, किसी सम्मान का कारण नहीं बन सकती।

इसी प्रकार जो व्यक्ति बकरे की क़ुर्बानी के साथ अपने नफ़्स की क़ुर्बानी भी करता है, वह सम्मानित लोगों के निकट आदर के योग्य है। लेकिन जो व्यक्ति केवल बकरे की क़ुर्बानी पर ही संतुष्ट हो जाता है, वह केवल नकल करने वाला और भाँड है, इसलिए किसी सम्मान का अधिकारी नहीं।

फिर यदि गहराई से विचार किया जाए तो ज्ञात होगा कि उन क़साइयों के अतिरिक्त, जो प्रतिदिन पशुओं को ज़बह करने के अभ्यस्त हो चुके होते हैं, दूसरे लोगों के स्वभाव पर पशु को ज़बह होते देखकर गहरा प्रभाव पड़ता है और उनके विचारों में एक तीव्र हलचल उत्पन्न हो जाती है।

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द षष्ठम, मुद्रित क़ादियान 2010, पृष्ठ 57)

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

मक्का वालों की ओर से नए सिरे से उपद्रवों का प्रारम्भ

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है दो-तीन माह के पश्चात् जब मक्का वालों की परेशानी दूर हुई तो उन्होंने इस्लाम के विरुद्ध पुनः एक नया मोर्चा संगठित किया। अतः उन्हीं दिनों में मदीने के एक रईस 'सअद बिन मआज़[रज़ि.] जो औस क़बीले के सरदार थे का'बा का तवाफ़ (परिक्रमा) करने के लिए मक्का गए तो अबूजहल ने उन्हें देख कर क्रुद्ध होकर कहा— क्या तुम लोग यह सोचते हो कि उस धर्म से विमुख हुए (मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व.) को शरण देने के पश्चात् तुम लोग शान्तिपूर्वक काबे का तवाफ़ कर सकोगे और तुम यह सोचते हो कि तुम उसकी सुरक्षा और सहायता की शक्ति रखते हो। ख़ुदा की सौगंध यदि इस समय तुम्हारे साथ अबू सफ़वान न होता तो तू अपने घर वालों के पास बच कर न जा सकता। सअद बिन मआज़[रज़ि.] ने कहा— ख़ुदा की क़सम यदि तुम ने हमें का'बा से रोका तो स्मरण रखो फिर तुम्हें भी तुम्हारे शाम के मार्ग पर अमन प्राप्त नहीं हो सकेगा। उन्हीं दिनों वलीद बिन मुग़ीरह मक्का का एक बहुत बड़ा रईस बीमार हुआ और उसने महसूस किया कि उसकी मृत्यु निकट है। एक दिन मक्का के बड़े-बड़े धनवान लोग उसके पास बैठे थे, वह अचानक रोने लग गया। मक्का के ये लोग आश्चर्यचकित हुए तथा उस से पूछा कि आप रोते क्यों है? वलीद ने कहा— क्या तुम समझते हो कि मैं मृत्यु के भय से रोता हूँ। ख़ुदा की क़सम ऐसा कदापि नहीं। मुझे तो यह चिन्ता है कि कहीं ऐसा न हो कि मुहम्मद (स.अ.व.) का धर्म फैल जाए और मक्का भी उसके अधिकार में चला जाए। अबू सुफ़ियान ने उत्तर में कहा— इस बात की चिन्ता न करो। जब तक हम जीवित हैं ऐसा नहीं होगा और हम इस बात के लिए वचनबद्ध हैं। इन समस्त घटनाओं से सिद्ध होता है कि मक्का के लोगों के अत्याचारों में जो अन्तराल हुआ था वह अस्थायी था। जाति को पुनः उकसाया जा रहा था, मरने वाले धनाढ्य लोग मृत्यु शैया पर भी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का विरोध जारी रखने की क़समें ले रहे थे, मदीना के लोगों को मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के विरुद्ध लड़ाई पर तैयार किया जा रहा था और उनके इन्कार पर धमकियां दी जा रही थीं कि मक्का वाले और उनके मित्र क़बीले मदीना पर सैन्य आक्रमण करेंगे मदीना के पुरुषों को मार देंगे तथा स्त्रियों को बन्दी बना कर दासियां बना लेंगे।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सुरक्षात्मक योजनाएँ

ऐसी परिस्थितियों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मदीना की सुरक्षा-व्यवस्था का बड़ा भारी दायित्व आ पड़ा !! अतः आप ने अपने साथियों को छोटे-छोटे दलों के रूप में मक्का के आस-पास भिजवाना आरम्भ किया ताकि आपको मक्का वालों की गतिविधियों का ज्ञान होता रहे। कई बार इन लोगों का मक्का के यात्री-दलों से या मक्का के कुछ समूहों से आमना-समना भी हो जाता और एक-दूसरे को देख लेने के पश्चात् लड़ाई तक भी नौबत पहुँच जाती। ईसाई लेखक लिखते हैं कि यह मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से छेड़-छाड़ थी। क्या मक्का में मुसलमानों पर तेरह वर्ष तक अत्याचार किया गया वह मदीना के लोगों को मुसलमानों के विरुद्ध खड़ा करने का जो प्रयास किया गया और फिर मदीना पर आक्रमण करने की जो धमकियां दी गईं, उन घटनाओं की उपस्थिति में आपका सतर्क रहने के लिए दलों का भेजना छेड़-छाड़ कहला सकता है? संसार का कौन सा क़ानून है जो मक्का के तेरह वर्षीय अत्याचारों के पश्चात् भी मुसलमानों और मक्का वालों में लड़ाई छेड़ने के लिए किसी 'अतिरिक्त' कारण की आवश्यकता समझता हो। आज पश्चिमी देश स्वयं को बहुत अधिक सभ्य समझते हैं। जो कुछ मक्का में हुआ क्या उनसे आधी घटनाओं पर भी कोई जाति लड़े तो कोई व्यक्ति उसे अपराधी ठहरा सकता है? क्या यदि कोई सरकार किसी अन्य देश के लोगों को एक समूह का वध करने या अपने देश से बहिष्कृत कर देने पर विवश करे तो उस समूह को यह अधिकार प्राप्त नहीं कि वह उस से युद्ध की घोषणा करे? अतः मदीना में इस्लामी राज्य की स्थापना के पश्चात् किसी नए कारण के उत्पन्न होने की आवश्यकता ही नहीं थी। मक्का के जीवन की घटनाएं मुसलमानों को पूर्ण अधिकार देती थीं कि वह मक्का वालों से युद्ध की घोषणा कर दें परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने धैर्य किया और केवल शत्रुओं की गतिविधियों का पता रखने की सीमा तक अपने प्रयास सीमित रखे, परन्तु जब मक्का वालों ने स्वयं मदीना के अरबों को मुसलमानों के विरुद्ध उत्तेजित किया, मुसलमानों को हज करने से रोक दिया तथा उन के उन व्यापारिक दलों ने जो व्यापार के लिए शाम में जाते थे अपने सीधे मार्ग को छोड़ कर मदीना के आस-पास के क़बीलों में से होकर गुज़रना और उन्हें मदीना वालों के विरुद्ध उकसाना आरम्भ किया तो मदीने की सुरक्षा के लिए मुसलमानों का भी कर्त्तव्य था कि वह उस लड़ाई की चुनौती को जो उन्हें मक्का वाले निरन्तर चौदह वर्ष से देते चले आ रहे थे स्वीकार कर लेते तो संसार के किसी व्यक्ति को हक़ नहीं, पहुँचता कि वह चुनौती स्वीकार करने पर आपत्ति जताए।

मदीना में इस्लामी शासन की नींव

नबी करीम (स.अ.व.) जहां बाह्य परिस्थितियों पर दृष्टि रखे हुए थे वहां मदीने के सुधार से भी असावधान नहीं थे। यह बताया जा चुका है कि मदीने के अधिकांश द्वैतवादी (मुश्रिक) शुद्ध हृदय से और कुछ छल-कपट के भाव के साथ मुसलमान हो चुके थे। इस लिए रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उनमें इस्लामी शासन-प्रणाली की स्थापना आरम्भ की। प्रथम अरबों के नियमानुसार लोग लड़-झगड़ कर अपने अधिकारों का निर्णय स्वयं कर लिया करते थे। अब नियमानुसार क़ाज़ी (न्यायाधीश) नियुक्त किए गए जिन के निर्णय के बिना कोई व्यक्ति दूसरे से अपना स्वत्त्व प्राप्त नहीं कर सकता था। पहले मदीना के लोगों का ध्यान शिक्षा की ओर न था। अब इस बात का प्रबंध किया गया कि शिक्षित लोग अशिक्षित लोगों को शिक्षा देना आरम्भ करें। अत्याचार, अनीति और अन्याय रोक दिया गया। स्त्रियों के अधिकार निश्चित किए गए। समस्त धनवानों पर शरीअत के अनुसार कर निर्धारित किए गए जो निर्धनों पर व्यय किए जाते थे तथा शहर की सामान्य अवस्था के विकास के लिए भी उपयोग में लाए जाते थे, श्रमिक वर्ग के अधिकारों की रक्षा की गई, अनाथों के लिए शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया गया, लेन-देन में लिखित प्रपत्र तथा समझौते की पाबन्दियां निर्धारित की गईं, दासों पर होने वाले क्रूर व्यवहारों को बलपूर्वक रोका जाने लगा, स्वच्छता और स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों पर बल दिया जाने लगा, जन-गणना का आरम्भ किया गया, गलियों और सड़कों को विस्तृत करने के आदेश जारी किए गए, सड़कों की सफ़ाई से संबंधित आदेश जारी किए गए। फलतः पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन के समस्त सिद्धान्तों का सम्पादन किया गया और उन्हें क्रमानुसार जारी करने के उपाय किए गए तथा अरब लोग पहली बार व्यवस्थित और सभ्य समाज के नियमों से परिचित हुए।

इधर रसूले करीम (स.अ.व.) अरब के लिए ऐसा कानून प्रस्तुत कर रहे थे जो न केवल उस युग के लिए अपितु हमेशा के लिए ; और न केवल उन के लिए अपितु संसार की अन्य जातियों के लिए भी सम्मान, प्रतिष्ठा, अमन और उन्नति का प्रेरक था। उधर

मक्का के लोग इस्लाम के विरुद्ध पूर्ण संसाधनों के साथ युद्ध की तैयारियों में व्यस्त थे, जिसका परिणाम बदर-युद्ध के रूप में प्रकट हुआ।

क़ुरैश के व्यापारिक दल का आगमन तथा बदर का युद्ध[1]

हिजरत (प्रवास) के तेरहवें माह में शाम से एक व्यापारी-दल अबू सुफ़ियान के नेतृत्व में आ रहा था कि उसकी सुरक्षा के बहाने मक्का वालों ने एक शक्तिशाली सेना मदीने की ओर ले जाने का निर्णय किया। रसूले करीम (स.अ.व.) को भी इसकी सूचना प्राप्त हो गई तथा ख़ुदा तआला की ओर से आप पर वह्यी हुई। अब समय आ गया है कि शत्रु के अत्याचार का उत्तर उसी के शस्त्र से दिया जाए। अतः आप मदीना के थोड़े से साथियों को लेकर निकले। आप जब मदीना से निकले हैं तो उस समय तक यह स्पष्ट न था कि क्या मुक़ाबला व्यापारी दल से होगा या सुनिश्चित सेना से। इसलिए आप के साथ मदीना से तीन सौ लोग निकले।

यह नहीं समझना चाहिए कि व्यापारी दल से अभिप्राय माल से लदे हुए ऊँट थे अपितु मक्का वाले उन दलों के साथ एक शक्तिशाली सैनिक दल भिजवाया करते थे क्योंकि वे उन दलों के माध्यम से मुसलमानों को आतंकित भी करना चाहते थे। अतः इस व्यापारी दल से पूर्व इतिहास में दो दलों की चर्चा आती है कि उनमें से एक की सुरक्षा पर दो सौ सैनिक नियुक्त थे तथा दूसरे की सुरक्षा पर तीन सौ सैनिक नियुक्त थे। अतः इन परिस्थितियों में ईसाई लेखकों का यह लिखना कि तीन सौ सिपाही लेकर आप मक्का के एक शस्त्रविहीन क़ाफ़िले को लूटने के लिए निकले थे मात्र धोखा देना है। यह क़ाफ़िला चूंकि बहुत बड़ा था इसलिए पहले क़ाफ़िलों के सुरक्षा-दलों की संख्या को देखते हुए यह समझना चाहिए कि उसके साथ चार-पाँच सौ सवार अवश्य होंगे। इतने विशाल सुरक्षा-दल के साथ मुक़ाबला करने के लिए यदि इस्लामी सेना जो केवल तीन सौ लोगों पर आधारित थी, जिनके साथ पूरा समान भी न था निकली तो उसे लूट का नाम देना मात्र पक्षपात, द्वेष, हठ और अन्याय ही की संज्ञा दी जा सकती है। यदि केवल इस क़ाफ़िले का प्रश्न होता तब भी उस से लड़ाई युद्ध ही कहलाता और युद्ध भी आत्मरक्षात्मक युद्ध क्योंकि मदीने की सेना दुर्बल थी और केवल इसी उपद्रव को दूर करने के लिए निकली थी जिस से आस-पास के क़बीलों को उपद्रव करने पर उकसा कर मक्का के क़ाफ़िले फ़साद और दंगों की नींव रख रहे थे, परन्तु जैसा कि क़ुर्आन करीम से विदित होता है ख़ुदा की इच्छा भी थी कि क़ाफ़िले से नहीं अपितु मक्का का मूल सेना से मुकाबला हो और केवल मुसलमानों की वफ़ादारी और उन के ईमान को दर्शाने के लिए पहले से इस बात को प्रकट न होने दिया गया। जब मुसलमान पूर्ण तैयारी के बिना मदीना से निकल खड़े हुए तो कुछ दूर जाकर रसूले करीम (स.अ.व.) ने सहाबा[रज़ि.] पर स्पष्ट किया कि ख़ुदा की यही इच्छा है कि मक्का की असल सेना से ही सामना हो। सेना के संबंध में मक्का से जो सूचनाएं आ चुकी थीं उन से विदित होता था कि सेना की संख्या एक हज़ार से अधिक है और फिर वे सभी प्रशिक्षित अनुभवी सैनिक थे। रसूले करीम (स.अ.व.) के साथ आने वाले लोग मात्र तीन सौ तेरह (313) थे तथा उनमें से बहुत से ऐसे थे जो युद्ध कला से अपरिचित थे फिर उनके पास युद्ध सामग्री भी पूरी न थी। अधिकांश या तो पैदल थे या ऊँटों पर सवार थे, घोड़ा केवल एक था। इस छोटी सी सेना के साथ जो साधन विहीन भी थी, एक अनुभवी शत्रु का मुकाबला जो संख्या में उनसे तीन गुना से भी अधिक था अत्यन्त ख़तरनाक बात थी। इसलिए आप ने न चाहा कि कोई व्यक्ति उसकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध के लिए विवश किया जाए। अतः आप ने अपने साथियों के समक्ष यह प्रश्न प्रस्तुत किया कि अब क़ाफ़िले का कोई प्रश्न नहीं केवल सेना का ही मुक़ाबला किया जा सकता है और यह कि वे (साथी) इस संबंध में आप को परामर्श दें। एक के पश्चात् एक मुहाजिर (प्रवासी) खड़ा हुआ और उसने कहा— हे अल्लाह के रसूल! यदि शत्रु हमारे घरों पर चढ़ आया है तो हम उस से भयभीत नहीं, हम उसका मुक़ाबला करने के लिए तैयार हैं। प्रत्येक का उत्तर सुनकर आप यही फ़रमाते चले जाते मुझे और परामर्श दो— मुझे और परामर्श दो। उस समय तक मदीने के लोग चुप थे इसलिए कि आक्रमणकारी सेना मुहाजिरों की सम्बन्धी (रिश्तेदार) थी। उन्हें शंका थी कि कहीं ऐसा न हो कि उनकी बात से मुहाजिरों के हृदय को आघात पहुँचे। जब रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने बार-बार फ़रमाया— मुझे परामर्श दो तो एक अन्सारी (मदीना-निवासी मुसलमान) सरदार खड़े हुए और कहा— हे अल्लाह के रसूल ! परामर्श तो आप को मिल रहा है परन्तु फिर भी आप[स.] जो परामर्श मांग रहे हैं तो कदाचित आप का संकेत हम मदीना निवासियों की ओर है। आप[स.] ने फ़रमाया— हाँ ! उस सरदार ने उत्तर में कहा— हे अल्लाह के रसूल ! कदाचित आप हमारा परामर्श इसलिए मांग रहे हैं कि आप के मदीना आने से पूर्व हमारे और आप के मध्य एक समझौता हुआ था और वह यह था कि यदि मदीना में आप पर या मुहाजिरों पर किसी ने आक्रमण किया तो हम आप की रक्षा करेंगे, परन्तु इस समय मदीना से बाहर निकल आए हैं और कदाचित वह समझौता इन परिस्थितियों के अन्तर्गत क़ायम नहीं रहता। हे अल्लाह के रसूल ! जिस समय वह समझौता हुआ था उस समय तक हम पर आप[स.] की वास्तविकता पूर्णतया स्पष्ट नहीं हुई थी, परन्तु अब जब कि हम पर आप[स.] का स्थान और आप की शान पूर्ण रूप से स्पष्ट हो चकी है। हे अल्लाह के रसूल ! अब उस समझौते का कोई प्रश्न नहीं। हम मूसा[अ.] के साथियों की भांति आप से यह नहीं कहेंगे—

اِذْهَبْ اَنْتَ وَربُّکَ فَقَاتِلَا اِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ

तू और तेरा रब्ब जाओ और शत्रु से युद्ध करते फिरो हम तो यहीं बैठे हैं।

अपितु हम आप के दाएं भी लड़ेंगे, बाएं भी लड़ेंगे, आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे। हे अल्लाह के रसूल ! शत्रु जो आप को हानि पहुँचाने पर कटिबद्ध है वह आप तक नहीं पहुँच सकता जब तक हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे। हे अल्लाह के रसूल ! युद्ध तो एक साधारण बात है, यहाँ से थोड़ी सी दूरी पर समुद्र है आप हमें आदेश दीजिए कि समुद्र में अपने घोड़े डाल दो, हम निःसंकोच अपने घोड़े समुद्र में डाल देंगे।[1] यह वह श्रद्धा, त्याग और बलिदान का आदर्श था जिसका उदाहरण कोई पूर्वकालीन नबी प्रस्तुत नहीं कर सकता। मूसा[अ.] के साथियों का उदाहरण तो उन्होंने स्वयं ही दे दिया था। हज़रत मसीह के हवारियों ने शत्रु के मुक़ाबले में जो नमूना दिखाया इन्जील उस पर गवाह है। एक हवारी ने तो कुछ रुपयों के बदले अपने उस्ताद (हज़रत मसीह) को बेच दिया, दूसरे ने उस पर फटकार डाली और दस हवारी उसे छोड़ कर इधर-उधर भाग गए परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के साथी केवल डेढ़ वर्ष की संगति के पश्चात ईमान में इतने दृढ़ हो गए कि वे उनके कहने पर समुद्र में कूद पड़ने के लिए भी तैयार थे।

यह परामर्श केवल इस उद्देश्य से था ताकि जो लोग ईमान में निबल हों उन्हें वापस जाने की अनुमति दे दी जाए। परन्तु जब मुहाजिर और अन्सार ने एक-दूसरे से बढ़कर वफ़ादारी और ईमान का आदर्श प्रस्तुत किया और दोनों पक्षों ने इस बात पर सहमति प्रकट की कि वे ख़ुदा के वादों के अनुसार शत्रु से केवल एक तिहाई(⅓) होने के बावजूद, संसाधनों की दृष्टि से शत्रु से कई गुना कम होने के बावजूद निर्लज्जता दिखाते हुए युद्ध से पीठ नहीं दिखाएंगे अपितु ख़ुदा तआला के धर्म का स्वाभिमान प्रदर्शित करते हुए रणभूमि में सहर्ष प्राणों का बलिदान देंगे। अतः आप[स.] आगे बढ़े। आप जब बदर के स्थान पर पहुँचे तो एक सहाबी के परामर्श से शत्रु के निकट जा कर बदर के

झरने पर इस्लामी सेना उतार दी गई, परन्तु इस प्रकार यद्यपि पानी पर तो क़ब्ज़ा हो गया परन्तु वह मैदान जो मुसलमानों के भाग में आया रेतीला होने के कारण युद्ध की गतिविधियों के लिए अत्यन्त हानिप्रद सिद्ध हुआ तथा सहाबा घबरा गए। रसूले करीम (स.अ.व.) सारी रात दुआ करते रहे और ख़ुदा से बार-बार विनय करते थे कि हे मेरे रब्ब ! समस्त संसार में केवल यही लोग तेरी उपासना करने वाले हैं। हे मेरे रब्ब ! यदि आज ये लोग इस युद्ध में मारे गए तो संसार में तेरा नाम लेने वाला कोई शेष न रहेगा[1]। अल्लाह तआला ने आपकी दुआएं सुनीं और रात को वर्षा हो गई, जिसका परिणाम यह हुआ कि जिस मैदान में मुसलमान थे वह रेतीला होने के कारण वर्षा से जम गया और काफ़िरों का चिकनी मिट्टी वाला मैदान वर्षा के कारण अत्यधिक फिसलन वाला हो गया। कदाचित मक्का के काफ़िरों ने इस मैदान में मुसलमानों से पूर्व पहुँच जाने के बावजूद इस मैदान को इसलिए चुना था कि सख़्त मिट्टी के कारण उस में युद्ध संबंधी गतिविधियां नितान्त सरलतापूर्वक हो सकती थीं और सामने का रेतीला मैदान इसलिए छोड़ दिया था कि मुसलमान वहाँ डेरा लगा लेंगे तथा युद्ध संबंधी कार्यवाहियां करते समय उनके पैर रेत में धंस-धंस जाएंगे, परन्तु ख़ुदा तआला ने रातों-रात पासा पलट दिया। रेतीला मैदान एक ठोस मैदान बन गया और ठोस मैदान फिसलन वाली भूमि बन गई। रात को अल्लाह तआला ने आपको शुभ सन्देश दिया और बताया कि तुम्हारे अमुक-अमुक शत्रु मारे जाएंगे और अमुक-अमुक स्थान पर मर कर गिरेंगे। अतः युद्ध में ऐसा ही हुआ तथा वह शत्रु आपके बताए हुए उन्हीं स्थानों पर मारे गए। जब सेना एक दूसरे के मुकाबले पर खड़ी हुई, उस समय सहाबा[रज़ि] ने जिस श्रद्धा का प्रदर्शन किया उस पर निम्नलिखित उदाहरण से भली-भांति प्रकाश पड़ता है।

इस्लामी सेना में कुछ अनुभवी सेनानी थे। उनमें से एक हज़रत 'अब्दुर्रमान बिन औफ़' भी थे जो मक्का के सरदारों में से थे। वह वर्णन करते हैं कि मेरा विचार था कि आज मुझ पर बहुत ही बड़ी ज़िम्मेदारी आती है। इस विचार से मैंने अपने दाएं-बाएं देखा तो मुझे विदित हुआ कि मेरे दाएं-बाएं मदीना के दो नौजवान लड़के हैं। तब सीने में मेरा हृदय बैठ गया और मैंने कहा कि वीर सेनानी लड़ने के लिए इस बात का मुहताज होता है कि उस का दायां और बायां पहलू दृढ़ हो ताकि वह शत्रुओं की पंक्तियों में निर्भीकता से घुस सके, परन्तु मेरे पास तो मदीने के दो ऐसे लड़के हैं जिन्हें कोई अनुभव भी नहीं। अपने युद्ध-कौशल का प्रदर्शन किस प्रकार कर सकूँगा। अभी यह विचार मेरे हृदय में आया ही था कि मेरे एक पहलू में खड़े हुए लड़के ने मेरी पसली में कुहनी मारी। जब मैंने उसकी ओर ध्यान दिया तो उसने मेरे कान में कहा— चाचा हम ने सुना है अबू जहल रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को बहुत दुःख दिया करता था। चाचा ! मेरा दिल चाहता है कि मैं आज उसके साथ मुक़ाबला करूँ। आप मुझे बताएं वह कौन है? वह कहते हैं कि अभी मैं उत्तर नहीं दे पाया था कि मेरे दूसरे पहलू में खड़े दूसरे साथी ने कुहनी मारी और जब मैं उसकी तरफ मुड़ा तो उसने भी आहिस्ता से मुझ से वही प्रश्न किया। वह कहते हैं— मैं उनकी इस दिलेरी पर स्तब्ध रह गया क्योंकि अनुभवी सिपाही होने के बावजूद मैं सोच भी नहीं सकता था कि सेना के सेनापति पर अकेले आक्रमण कर सकता हूँ। वह कहते हैं मैंने उन के इस प्रश्न पर उंगली उठाई और कहा— वह व्यक्ति जो सर से पैर तक सशस्त्र है और शत्रुओं की पंक्तियों के पीछे खड़ा है तथा जिसके आगे दो अनुभवी सैनिक नंगी तलवारें लिए खड़े हैं, वही 'अबू जहल' है। वह कहते हैं अभी मेरी उंगली नीचे नहीं गिरी थी कि वे दोनों लड़के जिस प्रकार शिकारी पक्षी श्येन चिड़िया पर आक्रमण करता है उस प्रकार से ललकारते हुए शत्रु की पंक्तियों में घुस गए। उन का यह आक्रमण ऐसा सहसा और अप्रत्याशित था कि उनके विरुद्ध किसी व्यक्ति की तलवार न उठ सकी और वे सनसनाते हुए वाण के समान अबूजहल तक जा पहुँचे। उसके अंग रक्षकों ने उन पर प्रहार किए। एक का प्रहार खाली गया तथा दूसरे पहरेदार के प्रहार से एक युवक का हाथ कट गया, परन्तु दोनों में से किसी ने कोई परवाह न की और केवल अबूजहल को लक्ष्य बनाते हुए उस पर इतनी तीव्रता से आक्रमण किया कि वह गिर गया फिर उन्होंने उसे बहुत बुरी तरह घायल कर दिया। परन्तु तलवार चलाने की कला का अनुभव न होने के कारण उसका वध न कर सके। इस घटना से विदित होता है कि वे अत्याचार जो मक्का के लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर करते रहते थे, वे निकट से देखने वालों को कितने भयानक दिखाई देते थे। अब भी उन अत्याचारों को इतिहास में पढ़कर एक सज्जन मनुष्य का हृदय कांपने लगता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं परन्तु मदीने के लोग तो उन लोगों के मुख से उन अत्याचारों के वृत्तान्त सुनते थे जिन्होंने वे अत्याचार अपनी आँखों से देखे थे। एक ओर रसूले करीम (स.अ.व.) का पवित्र और मैत्रीपूर्ण जीवन देखते थे तथा दूसरी ओर मक्का वालों की अमानवीय नृशंस घटनाएं सुनते थे तो उनके हृदय इस खेद से भर जाते थे कि अपने मैत्रीपूर्ण और शान्त स्वभाव के कारण हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उसकी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन नहीं किया। काश ! व हमारे सामने आ जाएं तो हम उन्हें बताएं कि यदि उनके अत्याचारों का प्रत्युत्तर नहीं दिया गया तो उसका कारण यह नहीं था कि मुसलमान कमज़ोर थे अपितु उसका कारण यह था कि मुसलमानों को ख़ुदा तआला की ओर से उनका प्रत्युत्तर देने की आज्ञा नहीं थी। मुसलमानों के हृदयों की दशा का अनुमान इस बात से भी हो सकता है कि युद्ध आरम्भ होने से पूर्व अबू-जहल ने एक बद्दू सरदार को इस बात के लिए भेजा कि वह अनुमान लगाए कि मुसलमानों की संख्या कितनी है।

शेष ..

पृष्ठ 2 का शेष

"क़ुर्बानी के मांस के संबंध में यह आदेश है कि यह सदक़ा नहीं होता। चाहिए कि स्वयं खाएँ, मित्रों को दें, चाहे सुखा भी लें। धनी निर्धनों को दें, निर्धन धनी लोगों को दें। इससे प्रेम बढ़ता है। लेकिन केवल धनी लोगों को देना इस्लाम की भावना को काटना है और केवल निर्धनों को देना तथा धनी लोगों को न देना भी इस्लाम में उचित नहीं। धनी लोगों के निर्धनों को और निर्धनों के धनी लोगों को देने से प्रेम बढ़ता है और धर्म का उद्देश्य, जो प्रेम फैलाना है, पूरा होता है।"

(अल-फ़ज़्ल, 17 अगस्त 1922)

क्या दूसरों की ओर से क़ुर्बानी हो सकती है?

इस बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"कई लोग निर्धन होते हैं, इसलिए इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कोई व्यक्ति क़ुर्बानी से वंचित न रह जाए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तरीका था कि आप निर्धन उम्मत की ओर से एक क़ुर्बानी किया करते थे। इसी तरीके के अनुसार मेरा नियम यह है कि मैं अपनी जमाअत के निर्धनों की ओर से एक क़ुर्बानी किया करता हूँ।"

(अल-फ़ज़्ल, 17 अगस्त 1922)

क़ुर्बानी के मांस के वितरण में विशेष रूप से निर्धनों और कमज़ोरों को खोजकर उन्हें दिया जाए ताकि ख़ुदा तआला की प्रेमपूर्ण दृष्टि हम पर पड़े। इसकी प्रेरणा देते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"मैं आप सबको याद दिलाता हूँ कि अपने निर्धन भाइयों, कमज़ोरों और असहाय लोगों को अपनी क़ुर्बानी में अवश्य याद रखें। अपने रिश्तेदारों और अपने लिए भी एक-तिहाई हिस्सा निस्संदेह रखें और उपयोग करें, मगर कुछ हिस्सा जमाअत के सुपुर्द करें ताकि वह निर्धनों और ग़रीबों में बाँट सके और कुछ हिस्सा स्वयं अपने परिचित या अपरिचित निर्धनों में बाँटें जिन पर आपकी नज़र पड़े। यदि आपकी नज़र निर्धनों को खोजकर उनकी कमज़ोरियों को दूर करने के उद्देश्य से पड़ेगी, अर्थात उनकी आर्थिक कठिनाइयों और उनकी असहायता को दूर करने के लिए पड़ेगी, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ख़ुदा तआला की नज़र आप पर पड़ेगी और आपकी कमज़ोरियों को दूर फ़रमाएगा। अतः यह बहुत बड़ा सौदा है। निर्धनों को खोजना और खोजकर उन तक पहुँचना इस बात को आमंत्रण देता है कि ख़ुदा तआला आपको खोजे और आप तक पहुँचे, और ऐसा अवश्य होगा।"

(ख़ुत्बात-ए-ताहिर, ईदैन, पृष्ठ 642)

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 28 May 2026 Issue No. 22

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{47} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

खाकसार निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यूँ तो इल्हामों का सिलसिला बहुत पहले से शुरू हो चुका था, लेकिन वह इल्हाम जिसमें आपको ख़ुदा तआला की तरफ से सृष्टि की सुधार के लिए स्पष्ट रूप से नियुक्त किया गया, मार्च 1882 ई. में हुआ, जब आप "बराहीन-ए-अहमदिया" भाग तीसरा लिख रहे थे (देखो बराहीन-ए-अहमदिया भाग तीसरा, पृष्ठ 238)। लेकिन उस समय आपने बैअत का सिलसिला शुरू नहीं किया बल्कि इसके लिए आगे के आदेश का इंतजार किया।

फिर जब ख़ुदा तआला का आदेश नाज़िल हुआ तो आपने दिसंबर 1888 ई. में बैअत के लिए घोषणा की और इश्तिहार के माध्यम से लोगों को आमंत्रित किया, और 1889 ई. की शुरुआत में बैअत लेना शुरू कर दिया। लेकिन उस समय तक भी आपको केवल मुजद्दिद और मबऊस (नियुक्त) होने का दावा था। और यद्यपि शुरू से ही आपके इल्हामों में आपके मसीह मौऊद होने की स्पष्ट ओर इशारे मौजूद थे, लेकिन ख़ुदाई व्यवस्था के अनुसार एक समय तक आपने मसीह मौऊद होने का दावा नहीं किया, बल्कि केवल यही फ़रमाते रहे कि मुझे सृष्टि की सुधार के लिए हज़रत ईसा मसीह के रूप में स्थापित किया गया है और मुझे हज़रत ईसा से समानता दी गई है।

इसके बाद 1891 ई. के आरंभ में आपने हज़रत ईसा मसीह के निधन के अक़ीदे की घोषणा की और यह दावा किया कि जिस मसीह का इस उम्मत के लिए वादा था वह मैं हूँ। आपकी आम विरोध की शुरुआत मुख्य रूप से इसी दावे से होती है। आपके नबी और रसूल होने के बारे में भी प्रारंभिक इल्हामों में स्पष्ट संकेत पाए जाते हैं, लेकिन इस दावे से भी अल्लाह की मंशा ने आपको कुछ समय तक रोके रखा, यहाँ तक कि बीसवीं सदी आ गई, तब जाकर आपने अपने बारे में नबी और रसूल के शब्द स्पष्ट रूप से प्रयोग करना शुरू किया।

और विशेष रूप से "मसीह के समान कृष्ण अवतार" होने का दावा आपने इससे भी बहुत बाद, अर्थात 1904 ई. में प्रकाशित किया। और यह सब कुछ पूरी तरह ख़ुदा तआलाीय नियंत्रण के अधीन था, इसमें आपका अपना कोई हस्तक्षेप नहीं था।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन में भी यही क्रमिक (धीरे-धीरे) प्रकटन दिखाई देता है, और इसमें कई हिकमतें हैं जिनके बयान की यहाँ गुंजाइश नहीं।

{48} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

खाकसार निवेदन करता है कि हमारे दादा साहब के दादा अर्थात मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहब बहुत परहेज़गार, तक़वा वाले और ज्ञान प्रेमी व्यक्ति थे। उनके समय में क़ादियान व्यवहारिक विद्वानों का केंद्र था। लेकिन उनके समय में सिखों की तरफ से हमारी पैतृक रियासत पर हमले शुरू हो गए थे और कई गाँव छिन भी गए थे, लेकिन उन्होंने जागीर का बड़ा हिस्सा बचा लिया।

उनकी मृत्यु के बाद, जो लगभग 1800 ई. में हुई, उनके पुत्र मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहब परिवार के सरदार बने। उनके समय में रामगढ़ी सिखों ने पूरी रियासत छीन ली और उन्हें क़ादियान में, जो उन दिनों दीवारों से सुरक्षित था, घिरकर रहना पड़ा। अंततः सिखों ने धोखे से शहर पर कब्ज़ा कर लिया, हमारी पुस्तकालय को जला दिया और मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहब को उनके रिश्तेदारों सहित क़ादियान छोड़ना पड़ा।

फिर मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहब बीगोवाल, रियासत कपूरथला चले गए, जहाँ के सिख सरदार ने उन्हें बड़े सम्मान से रखा और मेहमान बनाया। कुछ वर्षों बाद मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहब को दुश्मनों ने ज़हर दिलवाया और उनकी मृत्यु हो गई। उस समय हमारे दादा साहब की उम्र बहुत कम थी, लेकिन उनकी माता जी बताती हैं कि इसके बावजूद वे अपने पिता का जनाज़ा क़ादियान लाए ताकि उन्हें पारिवारिक कब्रिस्तान में दफ़न किया जाए।

यहाँ के सिखों ने विरोध किया, लेकिन क़ादियान की आम जनता विशेषकर निम्न वर्ग के लोगों ने दादा साहब का साथ दिया। हालात यहाँ तक पहुँच गए कि सिखों को डर हुआ कि कहीं बगावत न हो जाए, इसलिए उन्होंने अनुमति दे दी। इसके बाद दादा साहब वापस लौट आए।

उस समय सिखों ने हमारी पूरी संपत्ति और मकानों पर कब्ज़ा कर लिया था और कुछ मस्जिदों को भी धर्मशाला बना दिया गया था। फिर महाराजा रणजीत सिंह के समय में रामगढ़ियों का प्रभाव कम हो गया और पूरा क्षेत्र महाराजा रणजीत सिंह के अधीन आ गया। उस समय दादा साहब ने महाराजा से अपनी पैतृक संपत्ति का कुछ हिस्सा वापस लिया और क़ादियान लौट आए। इसके बाद दादा साहब और उनके छोटे भाई मिर्ज़ा गुलाम मुहीउद्दीन साहब ने महाराजा रणजीत सिंह के अधीन कई सैन्य सेवाएँ भी कीं। ये सभी बातें "पंजाब चीफ्स" (लेखक: सर लेपल ग्रिफिन) में विस्तार से दर्ज हैं।

सिख शासन के अंत के बाद फिर देश में अशांति फैल गई और हमारे परिवार को फिर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसी समय हमारे दादा साहब और उनके भाई मिर्ज़ा गुलाम मुहीउद्दीन साहब का बसरा वाँ किले में कैद होना संभवतः इसी दौर का है।

इसके बाद अंग्रेज़ आए तो उन्होंने हमारी पारिवारिक जागीर ज़ब्त कर ली और केवल 700 रुपये वार्षिक की एक सम्मानजनक पेंशन नकद रूप में निर्धारित की, जो दादा साहब की मृत्यु के बाद घटकर 180 रुपये रह गई और फिर ताया साहब के बाद पूरी तरह बंद हो गई।

इसके अतिरिक्त इन बड़े परिवर्तनों—सिखों के अंतिम दौर की अशांति और फिर शासन परिवर्तन—के कारण क़ादियान और उसके आसपास की संपत्ति के अधिकारों पर भी कई विवाद उत्पन्न हुए। कुछ गाँवों के अधिकार पूरी तरह समाप्त हो गए और केवल क़ादियान और कुछ निकटवर्ती गाँवों के बारे में दादा साहब ने बहुत धन ख़र्च करके कुछ अधिकार वापस लिए।

सुना गया है कि मुकदमों से पहले दादा साहब ने सभी रिश्तेदारों से कहा कि मैं मुकदमा करना चाहता हूँ, यदि तुम साथ देना चाहते हो तो आ जाओ, लेकिन सफलता की संभावना कम होने के कारण सबने इनकार कर दिया और कहा कि आप ही मुकदमा करें और यदि कुछ मिले तो आप ही ले लें।

लेकिन जब कुछ अधिकार मिल गए तो दादा साहब के मुख़्तार की सादगी के कारण सभी रिश्तेदारों के नाम संपत्ति के रिकॉर्ड में दर्ज हो गए, लेकिन कब्ज़ा केवल दादा साहब के पास रहा और बाकी लोगों को केवल आमदनी का कुछ हिस्सा मिलता था। हमारे परिवार का लगभग 1865 ई. का वंश वृक्ष निम्नलिखित है:

(यहाँ उर्दू में वंश का नक्शा (शजरा) दिया गया है)

जिन नामों के चारों ओर चौकोर निशान दिखाए गए हैं, वे वे लोग हैं जो 1865 में क़ादियान में हिस्सेदार दर्ज थे। क़ादियान की कुल संपत्ति पाँच हिस्सों में विभाजित थी। दो हिस्से मिर्ज़ा तसद्दुक जलीलानी की संतान को मिले, दो हिस्से मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहब की संतान को मिले, और एक हिस्सा विशेष रूप से मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा साहब को प्रबंधक के रूप में मिला, जो बाद में उनकी संतान में ही विभाजित हुआ।

खाकसार निवेदन करता है कि हमारे दादा साहब की मृत्यु के बाद ग़ैर-कब्ज़ाधारी साझेदारों ने मिर्ज़ा इमामुद्दीन आदि की उकसाने पर हमारे ताया मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहब के खिलाफ संपत्ति का दावा दायर कर दिया और अंततः चीफ कोर्ट ने ताया साहब के खिलाफ फैसला दिया।

इसके बाद मिर्ज़ा तसद्दुक जलीलानी और मिर्ज़ा क़ासिम बेग के पुत्रों का हिस्सा उस समझौते के अनुसार, जो पहले हो चुका था, मिर्ज़ा अज़ीम बेग लाहौरी ने ख़रीद लिया, जिसने मुकदमे का सारा ख़र्च इसी उद्देश्य से उठाया था। और मिर्ज़ा गुलाम मुहीउद्दीन साहब के पुत्र अपने-अपने हिस्से पर स्वयं काबिज हो गए।

मिर्ज़ा गुलाम हुसैन की कोई संतान नहीं हुई, इसलिए उनका हिस्सा मिर्ज़ा गुलाम मुर्तज़ा साहब और मिर्ज़ा गुलाम मुहीउद्दीन साहब के पुत्रों को मिल गया।

खाकसार निवेदन करता है कि इस समय मिर्ज़ा तसद्दुक जलीलानी और मिर्ज़ा क़ासिम बेग की पूरी शाखा समाप्त हो चुकी है। इसी प्रकार मिर्ज़ा गुलाम हैदर की शाखा भी समाप्त है। हमारे ताया मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर साहब, मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा कमालुद्दीन भी बिना संतान के निधन कर गए।

हाँ, मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन का एक पुत्र मिर्ज़ा गुल मुहम्मद मौजूद है, लेकिन वह अहमदी होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आध्यात्मिक संतान में शामिल हो चुका है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"يَنْقَطِعُ آبَاؤُكَ وَيُبْدَأُ مِنْكَ" (तज़किरा, पृष्ठ 397, प्रकाशित 2004)

और यह इल्हाम उस समय का है जब आपके पारिवारिक वंश की ये सभी शाखाएँ पूरी तरह हरी-भरी थीं।

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad